सुखमनी साहब

गउड़ी सुखमनी मः५ ॥

सलोकु ॥

१ਓ सतगिुर प्रसादि॥

आदि गुिरए नमह ॥

जुगादि गुिरए नमह ॥

सतगुिरए नमह ॥

स्री गुरदेवए नमह ॥१॥

असटपदी ॥

समिरउ समिरि सिमिरि सुखु पावउ ॥

कलि किलेस तन माहि मिटावउ ॥

समिरउ जासु बिसुमभर एकै ॥

नामु जपत अगनत अनेकै ॥

बेद पुरान समि्रति सुिधाख्यर ॥

कीने राम नाम इक आख्यर ॥

कनिका एक जिसु जीअ बसावै ॥

ता की महिमा गनी न आवै ॥

कांखी एकै दरस तुहारो ॥

नानक उन संगि मोहि उधारो ॥१॥

सुखमनी सुख अम्रित प्रभ नामु ॥

भगत जना कै मनि बिस्राम ॥

रहाउ ॥

प्रभ कै सिमरनि गरभि न बसै ॥

प्रभ कै सिमरनि दूखु जमु नसै ॥

प्रभ कै सिमरनि कालु परहरै ॥

प्रभ कै सिमरनि दुसमनु टरै ॥

प्रभ सिमरत कछु बिघनु न लागै ॥

प्रभ कै सिमरनि अनदिनु जागै ॥

प्रभ कै सिमरनि भउ न बिआपै ॥

प्रभ कै सिमरनि दुखु न संतापै ॥

प्रभ का सिमरनु साध कै संगि ॥

सरब निधान नानक हरि रंगि ॥२॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

प्रभ कै सिमरनि रिधि सिधि नउ निधि ॥
प्रभ कै सिमरनि गिआनु धिआनु ततु बुधि ॥
प्रभ कै सिमरनि जप तप पूजा ॥
प्रभ कै सिमरनि बिनसै दूजा ॥
प्रभ कै सिमरनि तीरथ इसनानी ॥
प्रभ कै सिमरनि दरगह मानी ॥
प्रभ कै सिमरनि होइ सु भला ॥
प्रभ कै सिमरनि सुफल फला ॥
से सिमरहि जिन आपि सिमराए ॥
नानक ता कै लागउ पाए ॥३॥

प्रभ का सिमरनु सभ ते ऊचा ॥
प्रभ कै सिमरनि उधरे मूचा ॥
प्रभ कै सिमरनि त्रिसना बुझै ॥
प्रभ कै सिमरनि सभु किछु सुझै ॥
प्रभ कै सिमरनि नाही जम त्रासा ॥
प्रभ कै सिमरनि पूरन आसा ॥

प्रभ कै सिमरनि मन की मलु जाइ ॥
अम्रित नामु रिद माहि समाइ ॥
प्रभ जी बसहि साध की रसना ॥
नानक जन का दासनि दसना ॥४॥

प्रभ कउ सिमरहि से धनवंते ॥
प्रभ कउ सिमरहि से पतिवंते ॥
प्रभ कउ सिमरहि से जन परवान ॥
प्रभ कउ सिमरहि से पुरख प्रधान ॥
प्रभ कउ सिमरहि सि बेमुहताजे ॥
प्रभ कउ सिमरहि सि सरब के राजे ॥
प्रभ कउ सिमरहि से सुखवासी ॥
प्रभ कउ सिमरहि सदा अबिनासी ॥
सिमरन ते लागे जिन आपि दइआला ॥
नानक जन की मंगै रवाला ॥५॥

प्रभ कउ सिमरहि से परउपकारी ॥
प्रभ कउ सिमरहि तिन सद बलिहारी ॥

प्रभ कउ सिमरहि से मुख सुहावे ॥
प्रभ कउ सिमरहि तिन सूखि बिहावै ॥
प्रभ कउ सिमरहि तिन आतमु जीता ॥
प्रभ कउ सिमरहि तिन निरमल रीता ॥
प्रभ कउ सिमरहि तिन अनद घनेरे ॥
प्रभ कउ सिमरहि बसहि हरि नेरे ॥
संत क्रिपा ते अनदिनु जागि ॥
नानक सिमरनु पूरै भागि ॥६॥

प्रभ कै सिमरनि कारज पूरे ॥
प्रभ कै सिमरनि कबहु न झूरे ॥
प्रभ कै सिमरनि हरि गुन बानी ॥
प्रभ कै सिमरनि सहजि समानी ॥
प्रभ कै सिमरनि निहचल आसनु ॥
प्रभ कै सिमरनि कमल बिगासनु ॥
प्रभ कै सिमरनि अनहद झुनकार ॥
सुखु प्रभ सिमरन का अंतु न पार ॥

समिरहि से जन जनि कउ प्रभ मइआ ॥

नानक तनि जन सरनी पइआ ॥७॥

हरि सिमिरनु करि भगत प्रगटाए ॥

हरि सिमिरनि लगि बेद उपाए ॥

हरि सिमिरनि भिए सिधि जती दाते ॥

हरि सिमिरनि नीच चहु कुंट जाते ॥

हरि सिमिरनि धारी सभ धरना ॥

समिरि सिमिरि हरि कारन करना ॥

हरि सिमिरनि कीओ सगल अकारा ॥

हरि सिमिरन महि आपि निरंकारा ॥

करि किरपा जिसु आपि बुझाइआ ॥

नानक गुरमुखि हरि सिमिरनु तिनि पाइआ ॥८॥१॥

सलोकु ॥

दीन दरद दुख भंजना घटि घटि नाथ अनाथ ॥

सरणि तुम्हारी आइओ नानक के प्रभ साथ ॥१॥

असटपदी ॥

जह मात पिता सुत मीत न भाई ॥

मन ऊहा नामु तेरै संगि सहाई ॥

जह महा भइआन दूत जम दलै ॥

तह केवल नामु संगि तेरै चलै ॥

जह मुसकल होवै अति भारी ॥

हरि को नामु खिन माहि उधारी ॥

अनिक पुनहचरन करत नही तरै ॥

हरि को नामु कोटि पाप परहरै ॥

गुरमुखि नामु जपहु मन मेरे ॥

नानक पावहु सूख घनेरे ॥१॥

सगल स्रिसटि को राजा दुखीआ ॥

हरि का नामु जपत होइ सुखीआ ॥

लाख करोरी बंधु न परै ॥

हरि का नामु जपत निसतरै ॥

अनिक माइआ रंग तिख न बुझावै ॥

हरि का नामु जपत आघावै ॥

जहि मारगि इहु जात इकेला ॥

तह हरि नामु संगि होत सुहेला ॥

ऐसा नामु मन सदा धिआईऐ ॥

नानक गुरमुखि परम गति पाईऐ ॥२॥

छूटत नही कोटि लख बाही ॥

नामु जपत तह पारि पराही ॥

अनिक बिघन जह आइ संघारै ॥

हरि का नामु ततकाल उधारै ॥

अनिक जोनि जनमै मरि जाम ॥

नामु जपत पावै बिस्राम ॥

हउ मैला मलु कबहु न धोवै ॥

हरि का नामु कोटि पाप खोवै ॥

ऐसा नामु जपहु मन रंगि॥

नानक पाईऐ साध कै संगि॥३॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

जहि मारग के गने जाहि न कोसा ॥

हरि का नामु ऊहा संगि तोसा ॥

जहि पैडै महा अंध गुबारा ॥

हरि का नामु संगि उजीआरा ॥

जहा पंथि तेरा को न सिञानू ॥

हरि का नामु तह नालि पछानू ॥

जह महा भइआन तपति बहु घाम ॥

तह हरि के नाम की तुम ऊपरि छाम ॥

जहा त्रिखा मन तुझु आकरखै ॥

तह नानक हरि हरि अम्रितु बरखै ॥४॥

भगत जना की बरतनि नामु ॥

संत जना कै मनि बिस्रामु ॥

हरि का नामु दास की ओट ॥

हरि कै नामि उधरे जन कोटि ॥

हरि जसु करत संत दिनु राति ॥

हरि हरि अउखधु साध कमाति ॥

हरि जिन कै हरि नामु निधानु ॥
पारब्रहमि जिन कीनो दानु ॥
मन तन रंगि रते रंग एकै ॥
नानक जन कै बिरति बिबेकै ॥५॥

हरि का नामु जन कउ मुकति जुगति ॥
हरि कै नामि जन कउ त्रिपति भुगति ॥
हरि का नामु जन का रूप रंगु ॥
हरि नामु जपत कब परै न भंगु ॥
हरि का नामु जन की वडिआई ॥
हरि कै नामि जन सोभा पाई ॥
हरि का नामु जन कउ भोग जोग ॥
हरि नामु जपत कछु नाहि बिओगु ॥
जनु राता हरि नाम की सेवा ॥
नानक पूजै हरि हरि देवा ॥६॥

हरि हरि जन कै मालु खजीना ॥
हरि धनु जन कउ आपि प्रभि दीना ॥

हरि हरि जन कै ओट सताणी ॥

हरि प्रतापि जन अवर न जाणी ॥

ओति पोति जन हरि रसि राते ॥

सुंन समाधि नाम रस माते ॥

आठ पहर जनु हरि हरि जपै ॥

हरि का भगतु प्रगट नही छपै ॥

हरि की भगति मुकति बहु करे ॥

नानक जन संगि केते तरे ॥७॥

पारजातु इहु हरि को नाम ॥

कामधेन हरि हरि गुण गाम ॥

सभ ते ऊतम हरि की कथा ॥

नामु सुनत दरद दुख लथा ॥

नाम की महिमा संत रिद वसै ॥

संत प्रतापि दुरतु सभु नसै ॥

संत का संगु वडभागी पाईऐ ॥

संत की सेवा नामु धिआईऐ ॥

नाम तुलि किछु अवरु न होइ ॥

नानक गुरमुखि नामु पावै जनु कोइ ॥८॥२॥

सलोकु ॥

बहु सासत्र बहु सिम्रिती पेखे सरब ढढोलि॥

पूजसि नाही हरि हिरे नानक नाम अमोल ॥१॥

असटपदी ॥

जाप ताप गिआन सभि धिआन ॥

खट सासत्र सिम्रिति विखआिन ॥

जोग अभिआस करम ध्रम करिआि ॥

सगल तिआगि बिन मधे फरिआि ॥

अनकि प्रकार कीए बहु जतना ॥

पुंन दान होमे बहु रतना ॥

सरीरु कटाइ होमै करि राती ॥

वरत नेम करै बहु भाती ॥

नही तुलि राम नाम बीचार ॥

नानक गुरमुखि नामु जपीऐ इक बार ॥१॥

नउ खंड प्रथिमी फिरै चिरु जीवै ॥
महा उदासु तपीसरु थीवै ॥
अगनि माहि होमत परान ॥
कनिक अस्व हैवर भूमि दान ॥
निउली करम करै बहु आसन ॥
जैन मारग संजम अति साधन ॥
निमख निमख करि सरीरु कटावै ॥
तउ भी हउमै मैलु न जावै ॥
हरि के नाम समसरि किछु नाहि ॥
नानक गुरमुखि नामु जपत गति पाहि ॥२॥

मन कामना तीरथ देह छुटै ॥
गरबु गुमानु न मन ते हुटै ॥
सोच करै दिनसु अरु राति ॥
मन की मैलु न तन ते जाति ॥
इसु देही कउ बहु साधना करै ॥
मन ते कबहू न बिखिआ टरै ॥

जलि धोवै बहु देह अनीति ॥
सुध कहा होइ काची भीति ॥
मन हरि के नाम की महिमा ऊच ॥
नानक नामि उधरे पतित बहु मूच ॥३॥

बहुतु सिआणप जम का भउ बिआपै ॥
अनिक जतन करि त्रिसन ना ध्रापै ॥
भेख अनेक अगनि नही बुझै ॥
कोटि उपाव दरगह नही सिझै ॥
छूटसि नाही ऊभ पइआलि ॥
मोहि बिआपहि माइआ जालि ॥
अवर करतूति सगली जमु डानै ॥
गोविंद भजन बिनु तिलु नही मानै ॥
हरि का नामु जपत दुखु जाइ ॥
नानक बोलै सहजि सुभाइ ॥४॥

चारि पदारथ जे को मागै ॥
साध जना की सेवा लागै ॥

जे को आपुना दूखु मिटावै ॥

हरि हरि नामु रिदै सद गावै ॥

जे को अपुनी सोभा लोरै ॥

साधसंगि इह हउमै छोरै ॥

जे को जनम मरण ते डरै ॥

साध जना की सरनी परै ॥

जिसु जन कउ प्रभ दरस पिआसा ॥

नानक ता कै बलि बलि जासा ॥५॥

सगल पुरख महि पुरखु प्रधानु ॥

साधसंगि जा का मिटै अभिमानु ॥

आपस कउ जो जाणै नीचा ॥

सोऊ गनीऐ सभ ते ऊचा ॥

जा का मनु होइ सगल की रीना ॥

हरि हरि नामु तिनि घटि घटि चीना ॥

मन अपुने ते बुरा मिटाना ॥

पेखै सगल स्रिसटि साजना ॥

सूख दूख जन सम द्रसिटेता ॥
नानक पाप पुंन नही लेपा ॥६॥

नरिधन कउ धनु तेरो नाउ ॥
नथिावे कउ नाउ तेरा थाउ ॥
नमिाने कउ प्रभ तेरो मानु ॥
सगल घटा कउ देवहु दानु ॥
करन करावनहार सुआमी ॥
सगल घटा के अंतरजामी ॥
अपनी गति मिति जानहु आपे ॥
आपन संगि आपि प्रभ राते ॥
तुम्हरी उसतति तुम ते होइ ॥
नानक अवरु न जानसि कोइ ॥७॥

सरब धरम महि स्रेसट धरमु ॥
हरि को नामु जपि निरमल करमु ॥
सगल क्रिआ महि ऊतम करिआ ॥
साधसंगि दुरमति मलु हरिआ ॥

सगल उदम महि उदमु भला ॥

हरि का नामु जपहु जीअ सदा ॥

सगल बानी महि अम्रित बानी ॥

हरि को जसु सुनि रसन बखानी ॥

सगल थान ते ओहु ऊतम थानु ॥

नानक जिह घटि वसै हरि नामु ॥८॥३॥

सलोकु ॥

निरगुनीआर इआनिआ सो प्रभु सदा समालि ॥

जिनि कीआ तिसु चीति रखु नानक निबही नालि ॥१॥

असटपदी ॥

रमईआ के गुन चेति परानी ॥

कवन मूल ते कवन द्रिसटानी ॥

जिनि तूं साजि सवारि सीगारिआ ॥

गरभ अगनि महि जिनहि उबारिआ ॥

बार बिवसथा तुझहि पिआरै दूध ॥

भरि जोबन भोजन सुख सूध ॥

बरिधि भिइआ ऊपरि साक सैन ॥
मुखि अपिआउ बैठ कउ दैन ॥
इहु निरगुनु गुनु कछू न बूझै ॥
बखसि लेहु तउ नानक सीझै ॥१॥

जिहि प्रसादि धर ऊपरि सुखि बसहि ॥
सुत भ्रात मीत बनिता संगि हसहि ॥
जिहि प्रसादि पीवहि सीतल जला ॥
सुखदाई पवनु पावकु अमुला ॥
जिहि प्रसादि भोगहि सभि रसा ॥
सगल समग्री संगि साथि बसा ॥
दीने हसत पाव करन नेत्र रसना ॥
तिसहि तिआगि अवर संगि रचना ॥
ऐसे दोख मूड़ अंध बिआपे ॥
नानक काढि लेहु प्रभ आपे ॥२॥

आदि अंति जो राखनहारु ॥
तिस सिउ प्रीति न करै गवारु ॥

जा की सेवा नव निधि पावै ॥

ता सिउ मूड़ा मनु नही लावै ॥

जो ठाकुरु सद सदा हजूरे ॥

ता कउ अंधा जानत दूरे ॥

जा की टहल पावै दरगह मानु ॥

तिसहि बिसारै मुगधु अजानु ॥

सदा सदा इहु भूलनहारु ॥

नानक राखनहारु अपारु ॥३॥

रतनु तिआगि कउडी संगि रचै ॥

साचु छोडि झूठ संगि मचै ॥

जो छडना सु असथिरु करि मानै ॥

जो होवनु सो दूरि परानै ॥

छोडि जाइ तिस का स्रमु करै ॥

संगि सहाई तिसु परहरै ॥

चंदन लेपु उतारै धोइ ॥

गरधब प्रीति भसम संगि होइ ॥

अंध कूप महि पतित बिकराल ॥

नानक काढि लेहु प्रभ दइआल ॥४॥

करतूति पसू की मानस जाति ॥

लोक पचारा करै दिनु राति ॥

बाहरि भेख अंतरि मलु माइआ ॥

छपसि नाहि कछु करै छपाइआ ॥

बाहरि गिआन धिआन इसनान ॥

अंतरि बिआपै लोभु सुआनु ॥

अंतरि अगनि बाहरि तनु सुआह ॥

गलि पाथर कैसे तरै अथाह ॥

जा कै अंतरि बसै प्रभु आपि ॥

नानक ते जन सहजि समाति ॥५॥

सुनि अंधा कैसे मारगु पावै ॥

करु गहि लेहु ओड़ि निबहावै ॥

कहा बुझारति बूझै डोरा ॥

निसि कहीऐ तउ समझै भोरा ॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

कहा बसिनपद गावै गुंग ॥

जतन करै तउ भी सुर भंग ॥

कह पंगुिल परबत पर भवन ॥

नही होत ऊहा उसु गवन ॥

करतार करुणा मै दीनु बेनती करै ॥

नानक तुमरी करिपा तरै ॥६॥

संगि सिहाई सु आवै न चीति ॥

जो बैराई ता सिउ प्रीति ॥

बलूआ के ग्रहि भीतरि बिसै ॥

अनद केल माइआ रंगि रिसै ॥

द्रड़ु करि मानै मनहि प्रतीति ॥

कालु न आवै मूड़े चीति ॥

बैर बिरोध काम क्रोध मोह ॥

झूठ बिकार महा लोभ ध्रोह ॥

इआहू जुगति बिहाने कई जनम ॥

नानक राखि लेहु आपन करि करम ॥७॥

तू ठाकुरु तुम पहि अरदासि ॥

जीउ पिंडु सभु तेरी रासि ॥

तुम मात पिता हम बारिक तेरे ॥

तुमरी क्रिपा महि सूख घनेरे ॥

कोइ न जानै तुमरा अंतु ॥

ऊचे ते ऊचा भगवंत ॥

सगल समग्री तुमरै सूत्रि धारी ॥

तुम ते होइ सु आगिआकारी ॥

तुमरी गति मिति तुम ही जानी ॥

नानक दास सदा कुरबानी ॥८॥४॥

सलोकु ॥

देनहारु प्रभ छोडि कै लागहि आन सुआइ ॥

नानक कहू न सीझई बिनु नावै पति जाइ ॥१॥

असटपदी ॥

दस बसतू ले पाछै पावै ॥

एक बसतु कारनि बिखोटि गवावै ॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

एक भी न देइ दस भी हिरि लेइ ॥

तउ मूड़ा कहु कहा करेइ ॥

जिसु ठाकुर सिउ नाही चारा ॥

ता कउ कीजै सद नमसकारा ॥

जा कै मनि लागा प्रभु मीठा ॥

सरब सूख ताहू मनि वूठा ॥

जिसु जन अपना हुकमु मनाइआ ॥

सरब थोक नानक तिनि पाइआ ॥१॥

अगनत साहु अपनी दे रासि ॥

खात पीत बरतै अनद उलासि ॥

अपुनी अमान कछु बहुरि साहु लेइ ॥

अगिआनी मनि रोसु करेइ ॥

अपनी परतीति आप ही खोवै ॥

बहुरि उस का बिस्वासु न होवै ॥

जिस की बसतु तिसु आगै राखै ॥

प्रभ की आगिआ मानै माथै ॥

www.nitnempath.com

उस ते चउगुन करै नहािलु ॥

नानक साहबि सदा दइआलु ॥२॥

अनकि भातमाइआ के हेत ॥

सरपर होवत जानु अनेत ॥

बरिख की छाइआ सिउ रंगु लावे ॥

ओह बनिसै उहु मनपिछुतावै ॥

जो दीसै सो चालनहारु ॥

लपटरहिओ तह अंध अंधारु ॥

बटाऊ सिउ जो लावै नेह ॥

ता कउ हाथनि आवै केह ॥

मन हरके नाम की प्रीतसुिखदाई ॥

करकरिपा नानक आपलिए लाई ॥३॥

मथिआि तनु धनु कुट्मबु सबाइआ ॥

मथिआि हउमै ममता माइआ ॥

मथिआि राज जोबन धन माल ॥

मथिआि काम क्रोध बकिराल ॥

मथिआ रथ हसती अस्व बसत्रा ॥

मथिआ रंग संगि माइआ पेखि हसता ॥

मथिआ ध्रोह मोह अभमिानु ॥

मथिआ आपस ऊपरि करत गुमानु ॥

असथरि भगति साध की सरन ॥

नानक जपि जपि जीवै हरि के चरन ॥४॥

मथिआ स्रवन पर नंदिा सुनहि ॥

मथिआ हसत पर दरब कउ हरिहि ॥

मथिआ नेत्र पेखत पर त्रअि रूपाद ॥

मथिआ रसना भोजन अन स्वाद ॥

मथिआ चरन पर बकिार कउ धावहि ॥

मथिआ मन पर लोभ लुभावहि ॥

मथिआ तन नही परउपकारा ॥

मथिआ बासु लेत बकिारा ॥

बनिु बूझे मथिआ सभ भए ॥

सफल देह नानक हरि हरि नाम लए ॥५॥

बरिथी साकत की आरजा ॥

साच बिना कह होवत सूचा ॥

बरिथा नाम बिना तनु अंध ॥

मुख आवत ता कै दुरगंध ॥

बिनु सिमरन दिनु रैनि ब्रिथा बिहाइ ॥

मेघ बिना जिउ खेती जाइ ॥

गोबिद भजन बिनु ब्रिथे सभ काम ॥

जिउ किरपन के निरारथ दाम ॥

धंनि धंनि ते जन जिह घटि बसिओ हरि नाउ ॥

नानक ता कै बलि बलि जाउ ॥६॥

रहत अवर कछु अवर कमावत ॥

मनि नही प्रीति मुखहु गंढ लावत ॥

जाननहार प्रभू परबीन ॥

बाहरि भेख न काहू भीन ॥

अवर उपदेसै आपि न करै ॥

आवत जावत जनमै मरै ॥

जिसि कै अंतरि बिसै निरंकारु ॥

तिसि की सीख तरै संसारु ॥

जो तुम भाने तिनि प्रभु जाता ॥

नानक उन जन चरन पराता ॥७॥

करउ बेनती पारब्रहमु सभु जानै ॥

अपना कीआ आपहि मानै ॥

आपहि आप आपि करत निबेरा ॥

किसै दूरि जनावत किसै बुझावत नेरा ॥

उपाव सिआनप सगल ते रहत ॥

सभु कछु जानै आतम की रहत ॥

जिसु भावै तिसु लए लड़ि लाइ ॥

थान थनंतरि रहिआ समाइ ॥

सो सेवकु जिसु किरपा करी ॥

निमख निमख जपि नानक हरी ॥८॥५॥

सलोकु ॥

काम क्रोध अरु लोभ मोह बिनसि जाइ अहमेव ॥

नानक प्रभ सरणागती करि प्रसादु गुरदेव ॥१॥

असटपदी ॥

जिह प्रसादि छतीह अम्रित खाहि ॥

तिसु ठाकुर कउ रखु मन माहि ॥

जिह प्रसादि सुगंधत तनि लावहि ॥

तिस कउ सिमरत परम गति पावहि ॥

जिह प्रसादि बसहि सुख मंदरि ॥

तिसहि धिआइ सदा मन अंदरि ॥

जिह प्रसादि ग्रिह संगि सुख बसना ॥

आठ पहर सिमरहु तिसु रसना ॥

जिह प्रसादि रंग रस भोग ॥

नानक सदा धिआईऐ धिआवन जोग ॥१॥

जिह प्रसादि पाट पट्मबर हढावहि ॥

तिसहि तिआगि कित अवर लुभावहि ॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

जहि प्रसादि सुखि सेज सोईजै ॥
मन आठ पहर ता का जसु गावीजै ॥
जहि प्रसादि तुझु सभु कोऊ मानै ॥
मुखि ता को जसु रसन बखानै ॥
जहि प्रसादि तेरो रहता धरमु ॥
मन सदा धिआइ केवल पारब्रहमु ॥
प्रभ जी जपत दरगह मानु पावहि ॥
नानक पति सेती घरि जावहि ॥२॥
जहि प्रसादि आरोग कंचन देही ॥
लिव लावहु तिसु राम सनेही ॥
जहि प्रसादि तेरा ओला रहत ॥
मन सुखु पावहि हरि हरि जिसु कहत ॥
जहि प्रसादि तेरे सगल छिद्र ढाके ॥
मन सरनी परु ठाकुर प्रभ ता कै ॥
जहि प्रसादि तुझु को न पहूचै ॥
मन सासि सासि सिमिरहु प्रभ ऊचे ॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

जहि प्रसादि पाई द्रुलभ देह ॥

नानक ता की भगति करेह ॥३॥

जहि प्रसादि आभूखन पहिरीजै ॥

मन तिसु सिमरत किउ आलसु कीजै ॥

जहि प्रसादि अस्व हसति असवारी ॥

मन तिसु प्रभ कउ कबहू न बिसारी ॥

जहि प्रसादि बाग मिलख धना ॥

राखु परोइ प्रभु अपुने मना ॥

जिनि तेरी मन बनत बनाई ॥

ऊठत बैठत सद तिसहि धिआई ॥

तिसहि धिआइ जो एक अलखै ॥

ईहा ऊहा नानक तेरी रखै ॥४॥

जहि प्रसादि करहि पुंन बहु दान ॥

मन आठ पहर करि तिस का धिआन ॥

जहि प्रसादि तू आचार बिउहारी ॥

तिसु प्रभ कउ सासि सासि चितारी ॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

जहि प्रसादि तेरा सुंदर रूपु ॥

सो प्रभु समिरहु सदा अनूपु ॥

जहि प्रसादि तेरी नीकी जाति ॥

सो प्रभु समिरि सिदा दनि राति ॥

जहि प्रसादि तेरी पति रिहै ॥

गुर प्रसादि नानक जसु कहै ॥५॥

जहि प्रसादि सुिनहि किरन नाद ॥

जहि प्रसादि पेिखहि बिसिमाद ॥

जहि प्रसादि बोलहि अम्रति रसना ॥

जहि प्रसादि सुखि सिहजे बसना ॥

जहि प्रसादि हिसत कर चलहि ॥

जहि प्रसादि स्मिपूरन फलहि ॥

जहि प्रसादि पिरम गति पावहि ॥

जहि प्रसादि सुखि सिहजि समावहि ॥

ऐसा प्रभु तिआगि अवर कत लागहु ॥

गुर प्रसादि नानक मनि जागहु ॥६॥

जहि प्रसादि तूं प्रगटु संसारि ॥
तसु प्रभ कउ मूलि न मनहु बिसारि ॥
जहि प्रसादि तेरा परतापु ॥
रे मन मूड़ तू ता कउ जापु ॥
जहि प्रसादि तेरे कारज पूरे ॥
तसिहि जानु मन सदा हजूरे ॥
जहि प्रसादि तूं पावहि साचु ॥
रे मन मेरे तूं ता सिउ राचु ॥
जहि प्रसादि सभ की गति होइ ॥
नानक जापु जपै जपु सोइ ॥७॥

आपि जपाए जपै सो नाउ ॥
आपि गावाए सु हरि गुन गाउ ॥
प्रभ किरपा ते होइ प्रगासु ॥
प्रभू दइआ ते कमल बिगासु ॥
प्रभ सुप्रसंन बसै मनि सोइ ॥
प्रभ दइआ ते मति ऊतम होइ ॥

सरब नधिान प्रभ तेरी मइआ ॥

आपहु कछू न कनिहू लइआ ॥

जति जति लावहु तति लगहि हरि नाथ ॥

नानक इन कै कछू न हाथ ॥८॥६॥

सलोकु ॥

अगम अगाध पारब्रहमु सोइ ॥

जो जो कहै सु मुकता होइ ॥

सुनि मीता नानकु बनिवंता ॥

साध जना की अचरज कथा ॥१॥

असटपदी ॥

साध कै संगि मुख ऊजल होत ॥

साधसंगि मिलु सगली खोत ॥

साध कै संगि मिटै अभमानु ॥

साध कै संगि प्रगटै सुगआनु ॥

साध कै संगि बुझै प्रभु नेरा ॥

साधसंगि सभु होत नबिेरा ॥

साध कै संगि पाए नाम रतनु ॥

साध कै संगि एक ऊपरि जतनु ॥

साध की महिमा बरनै कउनु प्रानी ॥

नानक साध की सोभा प्रभ माहि समानी ॥१॥

साध कै संगि अगोचरु मिलै ॥

साध कै संगि सिदा परफुलै ॥

साध कै संगि आवहि बसि पंचा ॥

साधसंगि अम्रित रसु भुंचा ॥

साधसंगि होइ सभ की रेन ॥

साध कै संगि मनोहर बैन ॥

साध कै संगि न कतहूं धावै ॥

साधसंगि असथिति मनु पावै ॥

साध कै संगि माइआ ते भिंन ॥

साधसंगि नानक प्रभ सुप्रसंन ॥२॥

साधसंगि दुसमन सभि मीत ॥

साधू कै संगि महा पुनीत ॥

साधसंगि किसि सिउ नही बैरु ॥

साध कै संगि न बीगा पैरु ॥

साध कै संगि नाही को मंदा ॥

साधसंगि जाने परमानंदा ॥

साध कै संगि नाही हउ तापु ॥

साध कै संगि तजै सभु आपु ॥

आपे जानै साध बडाई ॥

नानक साध प्रभू बनि आई ॥३॥

साध कै संगि न कबहू धावै ॥

साध कै संगि सदा सुखु पावै ॥

साधसंगि बसतु अगोचर लहै ॥

साधू कै संगि अजरु सहै ॥

साध कै संगि बसै थानि ऊचै ॥

साधू कै संगि महलि पहूचै ॥

साध कै संगि द्रिड़ै सभि धरम ॥

साध कै संगि केवल पारब्रहम ॥

साध कै संगि पाए नाम नधिान ॥

नानक साधू कै कुरबान ॥४॥

साध कै संगि सिभ कुल उधारै ॥

साधसंगि साजन मीत कुट्मब निसतारै ॥

साधू कै संगि सो धनु पावै ॥

जिसु धन ते सभु को वरसावै ॥

साधसंगि धिरम राइ करे सेवा ॥

साध कै संगि सोभा सुरदेवा ॥

साधू कै संगि पाप पलाइन ॥

साधसंगि अम्रित गुन गाइन ॥

साध कै संगि स्रिब थान गमि ॥

नानक साध कै संगि सिफल जनम ॥५॥

साध कै संगि निही कछु घाल ॥

दरसनु भेटत होत निहाल ॥

साध कै संगि किलूखत हरै ॥

साध कै संगि निरक परहरै ॥

साध कै संगि ईहा ऊहा सुहेला ॥
साधसंगि बिछुरत हरि मेला ॥
जो इछै सोई फलु पावै ॥
साध कै संगि न बिरथा जावै ॥
पारब्रहमु साध रिद बसै ॥
नानक उधरै साध सुनि रसै ॥६॥

साध कै संगि सुनउ हरि नाउ ॥
साधसंगि हरि के गुन गाउ ॥
साध कै संगि न मन ते बिसरै ॥
साधसंगि सरपर निसतरै ॥
साध कै संगि लगै प्रभु मीठा ॥
साधू कै संगि घटि घटि डीठा ॥
साधसंगि भए आगिआकारी ॥
साधसंगि गति भई हमारी ॥
साध कै संगि मिटे सभि रोग ॥
नानक साध भेटे संजोग ॥७॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

साध की महिमा बेद न जानहि ॥

जेता सुनहि तेता बखिआनहि ॥

साध की उपमा तिहु गुण ते दूरि ॥

साध की उपमा रही भरपूरि ॥

साध की सोभा का नाही अंत ॥

साध की सोभा सदा बेअंत ॥

साध की सोभा ऊच ते ऊची ॥

साध की सोभा मूच ते मूची ॥

साध की सोभा साध बनि आई ॥

नानक साध प्रभ भेदु न भाई ॥८॥७॥

सलोकु ॥

मनि साचा मुखि साचा सोइ ॥

अवरु न पेखै एकसु बिनु कोइ ॥

नानक इह लछण ब्रहम गिआनी होइ ॥१॥

असटपदी ॥

ब्रहम गिआनी सदा निरलेप ॥

www.nitnempath.com

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

जैसे जल महि कमल अलेप ॥

ब्रहम गिआनी सदा निरदोख ॥

जैसे सूरु सरब कउ सोख ॥

ब्रहम गिआनी कै द्रिसटि समानि ॥

जैसे राज रंक कउ लागै तुलि पवान ॥

ब्रहम गिआनी कै धीरजु एक ॥

जिउ बसुधा कोऊ खोदै कोऊ चंदन लेप ॥

ब्रहम गिआनी का इहै गुनाउ ॥

नानक जिउ पावक का सहज सुभाउ ॥१॥

ब्रहम गिआनी निरमल ते निरमला ॥

जैसे मैलु न लागै जला ॥

ब्रहम गिआनी कै मनि होइ प्रगासु ॥

जैसे धर ऊपरि आकासु ॥

ब्रहम गिआनी कै मित्र सत्रु समानि ॥

ब्रहम गिआनी कै नाही अभिमान ॥

ब्रहम गिआनी ऊच ते ऊचा ॥

मनि अपनै है सभ ते नीचा ॥

ब्रहम गिआनी से जन भए ॥

नानक जिन प्रभु आपि करेइ ॥२॥

ब्रहम गिआनी सगल की रीना ॥

आतम रसु ब्रहम गिआनी चीना ॥

ब्रहम गिआनी की सभ ऊपरि मइआ ॥

ब्रहम गिआनी ते कछु बुरा न भइआ ॥

ब्रहम गिआनी सदा समदरसी ॥

ब्रहम गिआनी की द्रिसटि अम्रितु बरसी ॥

ब्रहम गिआनी बंधन ते मुकता ॥

ब्रहम गिआनी की निरमल जुगता ॥

ब्रहम गिआनी का भोजनु गिआन ॥

नानक ब्रहम गिआनी का ब्रहम धिआनु ॥३॥

ब्रहम गिआनी एक ऊपरि आस ॥

ब्रहम गिआनी का नही बिनास ॥

ब्रहम गिआनी कै गरीबी समाहा ॥

ब्रहम गिआनी परउपकार उमाहा ॥

ब्रहम गिआनी कै नाही धंधा ॥

ब्रहम गिआनी ले धावतु बंधा ॥

ब्रहम गिआनी कै होइ सु भला ॥

ब्रहम गिआनी सुफल फला ॥

ब्रहम गिआनी संगि सगल उधारु ॥

नानक ब्रहम गिआनी जपै सगल संसारु ॥४॥

ब्रहम गिआनी कै एकै रंग ॥

ब्रहम गिआनी कै बसै प्रभु संग ॥

ब्रहम गिआनी कै नामु आधारु ॥

ब्रहम गिआनी कै नामु परवारु ॥

ब्रहम गिआनी सदा सद जागत ॥

ब्रहम गिआनी अहंबुधि तिआगत ॥

ब्रहम गिआनी कै मनि परमानंद ॥

ब्रहम गिआनी कै घरि सदा अनंद ॥

ब्रहम गिआनी सुख सहज निवास ॥
नानक ब्रहम गिआनी का नही बिनास ॥५॥

ब्रहम गिआनी ब्रहम का बेता ॥
ब्रहम गिआनी एक संगि हेता ॥
ब्रहम गिआनी कै होइ अचिंत ॥
ब्रहम गिआनी का निरमल मंत ॥
ब्रहम गिआनी जिसु करै प्रभु आपि ॥
ब्रहम गिआनी का बड परताप ॥
ब्रहम गिआनी का दरसु बडभागी पाईऐ ॥
ब्रहम गिआनी कउ बलि बलि जाईऐ ॥
ब्रहम गिआनी कउ खोजहि महेसुर ॥
नानक ब्रहम गिआनी आपि परमेसुर ॥६॥

ब्रहम गिआनी की कीमति नाहि ॥
ब्रहम गिआनी कै सगल मन माहि ॥
ब्रहम गिआनी का कउन जानै भेदु ॥
ब्रहम गिआनी कउ सदा अदेसु ॥

ब्रहम गिआनी का कथिआ न जाइ अधाख्यरु ॥
ब्रहम गिआनी सरब का ठाकुरु ॥
ब्रहम गिआनी की मिति कउनु बखानै ॥
ब्रहम गिआनी की गति ब्रहम गिआनी जानै ॥
ब्रहम गिआनी का अंतु न पारु ॥
नानक ब्रहम गिआनी कउ सदा नमसकारु ॥७॥

ब्रहम गिआनी सभ स्रिसटि का करता ॥
ब्रहम गिआनी सद जीवै नही मरता ॥
ब्रहम गिआनी मुकति जुगति जीअ का दाता ॥
ब्रहम गिआनी पूरन पुरखु बिधाता ॥
ब्रहम गिआनी अनाथ का नाथु ॥
ब्रहम गिआनी का सभ ऊपरि हाथु ॥
ब्रहम गिआनी का सगल अकारु ॥
ब्रहम गिआनी आपि निरंकारु ॥
ब्रहम गिआनी की सोभा ब्रहम गिआनी बनी ॥
नानक ब्रहम गिआनी सरब का धनी ॥८॥८॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

सलोकु ॥

उरि धारै जो अंतरि नामु ॥

सरब मै पेखै भगवानु ॥

निमख निमख ठाकुर नमसकारै ॥

नानक ओहु अपरसु सगल निसतारै ॥१॥

असटपदी ॥

मिथिआ नाही रसना परस ॥

मन महि प्रीति निरंजन दरस ॥

पर त्रिअ रूपु न पेखै नेत्र ॥

साध की टहल संतसंगि हेत ॥

करन न सुनै काहू की निंदा ॥

सभ ते जानै आपस कउ मंदा ॥

गुर प्रसादि बिखिआ परहरै ॥

मन की बासना मन ते टरै ॥

इंद्री जित पंच दोख ते रहत ॥

नानक कोटि मधे को ऐसा अपरस ॥१॥

बैसनो सो जिसु ऊपरि सुप्रसंन ॥

बिसन की माइआ ते होइ भिंन ॥

करम करत होवै निहकरम ॥

तिसु बैसनो का निरमल धरम ॥

काहू फल की इछा नही बाछै ॥

केवल भगति कीरतन संगि राचै ॥

मन तन अंतरि सिमरन गोपाल ॥

सभ ऊपरि होवत किरपाल ॥

आपि द्रिड़ै अवरह नामु जपावै ॥

नानक ओहु बैसनो परम गति पावै ॥२॥

भगउती भगवंत भगति का रंगु ॥

सगल तिआगै दुसट का संगु ॥

मन ते बिनसै सगला भरमु ॥

करि पूजै सगल पारब्रहमु ॥

साधसंगि पापा मलु खोवै ॥

तिसु भगउती की मति ऊतम होवै ॥

भगवंत की टहल करै निति नीति ॥
मनु तनु अरपै बिसिन परीति ॥
हर कि चरन हिरदै बसावै ॥
नानक ऐसा भगउती भगवंत कउ पावै ॥३॥

सो पंडितु जो मनु परबोधै ॥
राम नामु आतम महि सोधै ॥
राम नाम सारु रसु पीवै ॥
उसु पंडित कै उपदेसि जगु जीवै ॥
हर की कथा हिरदै बसावै ॥
सो पंडितु फिरि जोनि न आवै ॥
बेद पुरान सिम्रिति बूझै मूल ॥
सूखम महि जानै असथूलु ॥
चहु वरना कउ दे उपदेसु ॥
नानक उसु पंडित कउ सदा अदेसु ॥४॥

बीज मंत्रु सरब को गिआनु ॥
चहु वरना महि जपै कोऊ नामु ॥

जो जो जपै तसि की गत होइ ॥

साधसंग पावै जनु कोइ ॥

कर किरिपा अंतर उिर धारै ॥

पसु प्रेत मुघद पाथर कउ तारै ॥

सरब रोग का अउखदु नामु ॥

कलआिण रूप मंगल गुण गाम ॥

काहू जुगत कितै न पाईऐ धरम ॥

नानक तसिु मलिै जसिु लखिआि धुर करम ॥५॥

जसि कै मन पारब्रहम का नविासु ॥

तसि का नामु सत रामदासु ॥

आतम रामु तसिु नदरी आइआ ॥

दास दसंतण भाइ तनि पाइआ ॥

सदा नकिट नकिट हरि जानु ॥

सो दासु दरगह परवानु ॥

अपुने दास कउ आप किरिपा करै ॥

तसिु दास कउ सभ सोझी परै ॥

सगल संगि आतम उदासु ॥

ऐसी जुगति नानक रामदासु ॥६॥

प्रभ की आगिआ आतम हितावै ॥

जीवन मुकति सोऊ कहावै ॥

तैसा हरखु तैसा उसु सोगु ॥

सदा अनंदु तह नही बिओगु ॥

तैसा सुवरनु तैसी उसु माटी ॥

तैसा अम्रितु तैसी बिखु खाटी ॥

तैसा मानु तैसा अभिमानु ॥

तैसा रंकु तैसा राजानु ॥

जो वरताए साई जुगति ॥

नानक ओहु पुरखु कहीऐ जीवन मुकति ॥७॥

पारब्रहम के सगले ठाउ ॥

जितु जितु घरि राखै तैसा तिनि नाउ ॥

आपे करन करावन जोगु ॥

प्रभ भावै सोई फुनि होगु ॥

पसरिओ आपि होइ अनत तरंग ॥

लखे न जाहि पारब्रहम के रंग ॥

जैसी मति देइ तैसा परगास ॥

पारब्रहमु करता अबिनास ॥

सदा सदा सदा दइआल ॥

सिमरि सिमरि नानक भए निहाल ॥८॥९॥

सलोकु ॥

उसतति करहि अनेक जन अंतु न पारावार ॥

नानक रचना प्रभि रची बहु बिधि अनिक प्रकार ॥१॥

असटपदी ॥

कई कोटि होए पूजारी ॥

कई कोटि आचार बिउहारी ॥

कई कोटि भए तीरथ वासी ॥

कई कोटि बन भ्रमहि उदासी ॥

कई कोटि बेद के स्रोते ॥

कई कोटि तपीसुर होते ॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

कई कोटि आतम धिआनु धारहि ॥
कई कोटि कबि काबि बीचारहि ॥
कई कोटि नवतन नाम धिआवहि ॥
नानक करते का अंतु न पावहि ॥१॥

कई कोटि भए अभिमानी ॥
कई कोटि अंध अगिआनी ॥
कई कोटि किरपन कठोर ॥
कई कोटि अभिग आतम निकोर ॥
कई कोटि पर दरब कउ हिरहि ॥
कई कोटि पर दूखना करहि ॥
कई कोटि माइआ स्रम माहि ॥
कई कोटि परदेस भ्रमाहि ॥
जितु जितु लावहु तितु तितु लगना ॥
नानक करते की जानै करता रचना ॥२॥

कई कोटि सिध जती जोगी ॥
कई कोटि राजे रस भोगी ॥

कई कोटि पंखी सरप उपाए ॥

कई कोटि पाथर बिरख निपजाए ॥

कई कोटि पवण पाणी बैसंतर ॥

कई कोटि देस भू मंडल ॥

कई कोटि ससीअर सूर नख्यत्र ॥

कई कोटि देव दानव इंद्र सिरि छत्र ॥

सगल समग्री अपनै सूति धारै ॥

नानक जिसु जिसु भावै तिसु तिसु निसतारै ॥३॥

कई कोटि राजस तामस सातक ॥

कई कोटि बेद पुरान सिम्रिति अरु सासत ॥

कई कोटि कीए रतन समुद ॥

कई कोटि नाना प्रकार जंत ॥

कई कोटि कीए चिरि जीवे ॥

कई कोटि गिरी मेर सुवरन थीवे ॥

कई कोटि जख्य किंनर पिसाच ॥

कई कोटि भूत प्रेत सूकर म्रिगाच ॥

सभ ते नेरै सभहू ते दूरि ॥

नानक आपि अलिपतु रहिआ भरपूरि ॥४॥

कई कोटि पाताल के वासी ॥

कई कोटि नरक सुरग निवासी ॥

कई कोटि जनमहि जीवहि मरहि ॥

कई कोटि बहु जोनी फिरहि ॥

कई कोटि बैठत ही खाहि ॥

कई कोटि घालहि थकि पाहि ॥

कई कोटि कीए धनवंत ॥

कई कोटि माइआ महि चिंत ॥

जह जह भाणा तह तह राखे ॥

नानक सभु किछु प्रभ कै हाथे ॥५॥

कई कोटि भए बैरागी ॥

राम नाम संगि तिनि लिवि लागी ॥

कई कोटि प्रभ कउ खोजंते ॥

आतम महि पारब्रहमु लहंते ॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

कई कोटि दरसन प्रभ पिआस ॥

तिन कउ मिलिओ प्रभु अबिनास ॥

कई कोटि मागहि सतसंगु ॥

पारब्रहम तिन लागा रंगु ॥

जिन कउ होए आपि सुप्रसंन ॥

नानक ते जन सदा धनि धंनि ॥६॥

कई कोटि खाणी अरु खंड ॥

कई कोटि अकास ब्रहमंड ॥

कई कोटि होए अवतार ॥

कई जुगति कीनो बिसथार ॥

कई बार पसरिओ पासार ॥

सदा सदा इकु एकंकार ॥

कई कोटि कीने बहु भाति ॥

प्रभ ते होए प्रभ माहि समाति ॥

ता का अंतु न जानै कोइ ॥

आपे आपि नानक प्रभु सोइ ॥७॥

कई कोटि पारब्रहम के दास ॥

तिन होवत आतम परगास ॥

कई कोटि तित के बेते ॥

सदा निहारहि एको नेत्रे ॥

कई कोटि नाम रसु पीवहि ॥

अमर भए सद सद ही जीवहि ॥

कई कोटि नाम गुन गावहि ॥

आतम रसि सुखि सहजि समावहि ॥

अपुने जन कउ सासि सासि समारे ॥

नानक ओइ परमेसुर के पिआरे ॥८॥१०॥

सलोकु ॥

करण कारण प्रभु एकु है दूसर नाही कोइ ॥

नानक तिसु बलिहारणै जलि थलि महीअलि सोइ ॥१॥

असटपदी ॥

करन करावन करनै जोगु ॥

जो तिसु भावै सोई होगु ॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

खनि महि थापि उथापनहारा ॥

अंतु नही कछु पारावारा ॥

हुकमे धारि अधर रहावै ॥

हुकमे उपजै हुकमि समावै ॥

हुकमे ऊच नीच बिउहार ॥

हुकमे अनिक रंग परकार ॥

करि करि देखै अपनी वडिआई ॥

नानक सभ महि रहिआ समाई ॥१॥

प्रभ भावै मानुख गति पावै ॥

प्रभ भावै ता पाथर तरावै ॥

प्रभ भावै बिनु सास ते राखै ॥

प्रभ भावै ता हरि गुण भाखै ॥

प्रभ भावै ता पतित उधारै ॥

आपि करै आपन बीचारै ॥

दुहा सिरिआ का आपि सुआमी ॥

खेलै बिगसै अंतरजामी ॥

जो भावै सो कार करावै ॥

नानक द्रसिटी अवरु न आवै ॥२॥

कहु मानुख ते कआि होइ आवै ॥

जो तसिु भावै सोई करावै ॥

इस कै हाथि होइ ता सभु कछि लेइ ॥

जो तसिु भावै सोई करेइ ॥

अनजानत बखिआि महि रचै ॥

जे जानत आपन आप बचै ॥

भरमे भूला दह दसि धावै ॥

नमिख माहि चारि कुंट फरिि आवै ॥

करि किरिपा जसिु अपनी भगति देइ ॥

नानक ते जन नामि मिलेि ॥३॥

खनि महि नीच कीट कउ राज ॥

पारब्रहम गरीब नविाज ॥

जा का द्रसिटि किछू न आवै ॥

तसिु ततकाल दह दसि प्रगटावै ॥

जा कउ अपुनी करै बखसीस ॥

ता का लेखा न गनै जगदीस ॥

जीउ पिंडु सभ तिस की रासि ॥

घटि घटि पूरन ब्रहम प्रगास ॥

अपनी बणत आपि बनाई ॥

नानक जीवै देखि बडाई ॥४॥

इस का बलु नाही इसु हाथ ॥

करन करावन सरब को नाथ ॥

आगिआकारी बपुरा जीउ ॥

जो तिसु भावै सोई फुनि थीउ ॥

कबहू ऊच नीच महि बसै ॥

कबहू सोग हरख रंगि हसै ॥

कबहू निंद चिंद बिउहार ॥

कबहू ऊभ अकास पइआल ॥

कबहू बेता ब्रहम बीचार ॥

नानक आपि मिलावणहार ॥५॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

कबहू नरिति करै बहु भाति॥

कबहू सोइ रहै दिनु राति॥

कबहू महा क्रोध बिकराल ॥

कबहूं सरब की होत रवाल ॥

कबहू होइ बहै बड राजा ॥

कबहु भेखारी नीच का साजा ॥

कबहू अपकीरति महि आवै ॥

कबहू भला भला कहावै ॥

जिउ प्रभु राखै तिव ही रहै ॥

गुर प्रसादि नानक सचु कहै ॥६॥

कबहू होइ पंडितु करे बख्यानु ॥

कबहू मोनिधारी लावै धिआनु ॥

कबहू तट तीरथ इसनान ॥

कबहू सिधि साधिक मुखि गिआन ॥

कबहू कीट हसति पतिंग होइ जीआ ॥

अनिक जोनि भरमै भरमीआ ॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

नाना रूप जिउ स्वागी दिखावै ॥

जिउ प्रभ भावै तिवै नचावै ॥

जो तिसु भावै सोई होइ ॥

नानक दूजा अवरु न कोइ ॥७॥

कबहू साधसंगति इहु पावै ॥

उसु असथान ते बहुरि न आवै ॥

अंतरि होइ गिआन परगासु ॥

उसु असथान का नही बिनासु ॥

मन तन नामि रते इक रंगि ॥

सदा बसहि पारब्रहम कै संगि ॥

जिउ जल महि जलु आइ खटाना ॥

तिउ जोती संगि जोति समाना ॥

मिटि गए गवन पाए बिस्राम ॥

नानक प्रभ कै सद कुरबान ॥८॥११॥

सलोकु ॥

सुखी बसै मसकीनीआ आपु निवारि तले ॥

बडे बडे अहंकारीआ नानक गरबि गले ॥१॥

असटपदी ॥

जिसि कै अंतरि राज अभिमानु ॥

सो नरकपाती होवत सुआनु ॥

जो जानै मै जोबनवंतु ॥

सो होवत बिसटा का जंतु ॥

आपस कउ करमवंतु कहावै ॥

जनमि मरै बहु जोनि भ्रमावै ॥

धन भूमि का जो करै गुमानु ॥

सो मूरखु अंधा अगिआनु ॥

करि किरपा जिस कै हिरदै गरीबी बसावै ॥

नानक ईहा मुकतु आगै सुखु पावै ॥१॥

धनवंता होइ करि गरबावै ॥

त्रिण समानि कछु संगि न जावै ॥

बहु लसकर मानुख ऊपरि करे आस ॥

पल भीतरि ता का होइ बिनास ॥

सभ ते आप जानै बलवंतु ॥

खिन महि होइ जाइ भसमंतु ॥

किसै न बदै आपि अहंकारी ॥

धरम राइ तिसु करे खुआरी ॥

गुर प्रसादि जा का मिटै अभिमानु ॥

सो जनु नानक दरगह परवानु ॥२॥

कोटि करम करै हउ धारे ॥

स्रमु पावै सगले बिरथारे ॥

अनिक तपसिआ करे अहंकार ॥

नरक सुरग फिरि फिरि अवतार ॥

अनिक जतन करि आतम नही द्रवै ॥

हरि दरगह कहु कैसे गवै ॥

आपस कउ जो भला कहावै ॥

तिसहि भलाई निकटि न आवै ॥

सरब की रेन जा का मनु होइ ॥

कहु नानक ता की निरमल सोइ ॥३॥

जब लगु जानै मुझ ते कछु होइ ॥

तब इस कउ सुखु नाही कोइ ॥

जब इह जानै मै किछु करता ॥

तब लगु गरभ जोनि महि फिरिता ॥

जब धारै कोऊ बैरी मीतु ॥

तब लगु निहचलु नाही चीतु ॥

जब लगु मोह मगन संगि माइ ॥

तब लगु धरम राइ देइ सजाइ ॥

प्रभ किरपा ते बंधन तूटै ॥

गुर प्रसादि नानक हउ छूटै ॥४॥

सहस खटे लख कउ उठि धावै ॥

त्रिपति न आवै माइआ पाछै पावै ॥

अनिक भोग बिखिआ के करै ॥

नह त्रिपतावै खपि खपि मरै ॥

बिना संतोख नही कोऊ राजै ॥

सुपन मनोरथ ब्रिथे सभ काजै ॥

नाम रंगि सरब सुखु होइ ॥

बडभागी किसै परापति होइ ॥

करन करावन आपे आपि ॥

सदा सदा नानक हरि जापि ॥५॥

करन करावन करनैहारु ॥

इस कै हाथि कहा बीचारु ॥

जैसी द्रिसटि करे तैसा होइ ॥

आपे आपि आपि प्रभु सोइ ॥

जो किछु कीनो सु अपनै रंगि ॥

सभ ते दूरि सभहू कै संगि ॥

बूझै देखै करै बिबेक ॥

आपहि एक आपहि अनेक ॥

मरै न बिनसै आवै न जाइ ॥

नानक सद ही रहिआ समाइ ॥६॥

आपि उपदेसै समझै आपि ॥
आपे रचिआ सभ कै साथि ॥
आपि कीनो आपन बिसथारु ॥
सभु कछु उस का ओहु करनैहारु ॥
उस ते भिंनि कहहु किछु होइ ॥
थान थनंतरि एकै सोइ ॥
अपुने चलित आपि करणैहार ॥
कउतक करै रंग आपार ॥
मन महि आपि मन अपुने माहि ॥
नानक कीमति कहनु न जाइ ॥७॥

सति सति सति प्रभु सुआमी ॥
गुर परसादि किनै वखिआनी ॥
सचु सचु सचु सभु कीना ॥
कोटि मधे किनै बिरलै चीना ॥
भला भला भला तेरा रूप ॥
अति सुंदर अपार अनूप ॥

नरिमल नरिमल नरिमल तेरी बाणी ॥

घटि घटि सुिनी स्रवन बख्याणी ॥

पवित्र पवित्र पवित्र पुनीत ॥

नामु जपै नानक मनि प्रीति ॥८॥१२॥

सलोकु ॥

संत सरनि जो जनु परै सो जनु उधरनहार ॥

संत की निंदा नानका बहुरि बहुरि अवतार ॥१॥

असटपदी ॥

संत कै दूखनि आरजा घटै ॥

संत कै दूखनि जम ते नही छुटै ॥

संत कै दूखनि सुिखु सभु जाइ ॥

संत कै दूखनि निरक महि पाइ ॥

संत कै दूखनि मति होइ मलीन ॥

संत कै दूखनि सोिभा ते हीन ॥

संत के हते कउ रखै न कोइ ॥

संत कै दूखनि थान भ्रसटु होइ ॥

संत क्रिपाल क्रिपा जे करै ॥
नानक संतसंगि निंदकु भी तरै ॥१॥

संत के दूखन ते मुखु भवै ॥
संतन कै दूखनि काग जिउ लवै ॥
संतन कै दूखनि सिरप जोनि पाइ ॥
संत कै दूखनि त्रिगद जोनि किरमाइ ॥
संतन कै दूखनि त्रिसना महि जलै ॥
संत कै दूखनि सभु को छलै ॥
संत कै दूखनि तेजु सभु जाइ ॥
संत कै दूखनि नीचु नीचाइ ॥
संत दोखी का थाउ को नाहि ॥
नानक संत भावै ता ओइ भी गति पाहि ॥२॥

संत का निंदकु महा अतताई ॥
संत का निंदकु खिनु टिकनु न पाई ॥
संत का निंदकु महा हतिआरा ॥
संत का निंदकु परमेसुरि मारा ॥

संत का निंदकु राज ते हीनु ॥
संत का निंदकु दुखीआ अरु दीनु ॥
संत के निंदक कउ सरब रोग ॥
संत के निंदक कउ सदा बिजोग ॥
संत की निंदा दोख महि दोखु ॥
नानक संत भावै ता उस का भी होइ मोखु ॥३॥

संत का दोखी सदा अपवितु ॥
संत का दोखी किसै का नही मितु ॥
संत के दोखी कउ डानु लागै ॥
संत के दोखी कउ सभ तिआगै ॥
संत का दोखी महा अहंकारी ॥
संत का दोखी सदा बिकारी ॥
संत का दोखी जनमै मरै ॥
संत की दूखना सुख ते टरै ॥
संत के दोखी कउ नाही ठाउ ॥
नानक संत भावै ता लए मिलाइ ॥४॥

संत का दोखी अध बीच ते टूटै ॥

संत का दोखी कितै काजि न पहूचै ॥

संत के दोखी कउ उदिआन भ्रमाईऐ ॥

संत का दोखी उझड़ि पाईऐ ॥

संत का दोखी अंतर ते थोथा ॥

जिउ सास बिना मिरतक की लोथा ॥

संत के दोखी की जड़ किछु नाहि ॥

आपन बीजि आपे ही खाहि ॥

संत के दोखी कउ अवरु न राखनहारु ॥

नानक संत भावै ता लए उबारि ॥५॥

संत का दोखी इउ बिललाइ ॥

जिउ जल बिहून मछुली तड़फड़ाइ ॥

संत का दोखी भूखा नही राजै ॥

जिउ पावकु ईधनि नही ध्रापै ॥

संत का दोखी छुटै इकेला ॥

जिउ बूआड़ु तिलु खेत माहि दुहेला ॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

संत का दोखी धरम ते रहत ॥

संत का दोखी सद मिथिआ कहत ॥

किरतु निंदक का धुरि ही पइआ ॥

नानक जो तिसु भावै सोई थिआ ॥६॥

संत का दोखी बिगड़ रूपु होइ जाइ ॥

संत के दोखी कउ दरगह मिलै सजाइ ॥

संत का दोखी सदा सहकाईऐ ॥

संत का दोखी न मरै न जीवाईऐ ॥

संत के दोखी की पुजै न आसा ॥

संत का दोखी उठि चलै निरासा ॥

संत कै दोखि न त्रिसटै कोइ ॥

जैसा भावै तैसा कोई होइ ॥

पइआ किरतु न मेटै कोइ ॥

नानक जानै सचा सोइ ॥७॥

सभ घट तिस के ओहु करनैहारु ॥

सदा सदा तिस कउ नमसकारु ॥

प्रभ की उसतति करहु दिनु राति ॥
तिसहि धिआवहु सासि गिरासि ॥
सभु कछु वरतै तिस का कीआ ॥
जैसा करे तैसा को थीआ ॥
अपना खेलु आपि करनैहारु ॥
दूसर कउनु कहै बीचारु ॥
जिस नो क्रिपा करै तिसु आपन नामु देइ ॥
बडभागी नानक जन सेइ ॥८॥१३॥

सलोकु ॥
तजहु सिआनप सुरिजनहु सिमरहु हरि हरि राइ ॥
एक आस हरि मनि रखहु नानक दूखु भरमु भउ जाइ ॥१॥

असटपदी ॥
मानुख की टेक ब्रिथी सभ जानु ॥
देवन कउ एकै भगवानु ॥
जिस कै दीऐ रहै अघाइ ॥
बहुरि न त्रिसना लागै आइ ॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

मारै राखै एको आपि॥

मानुख कै किछु नाही हाथि॥

तिस का हुकमु बूझि सुखु होइ ॥

तिस का नामु रखु कंठि परोइ ॥

सिमरि सिमरि सिमरि प्रभु सोइ ॥

नानक बिघनु न लागै कोइ ॥१॥

उसतति मन महि करि निरंकार ॥

करि मन मेरे सति बिउहार ॥

निरमल रसना अम्रितु पीउ ॥

सदा सुहेला करि लेहि जीउ ॥

नैनहु पेखु ठाकुर का रंगु ॥

साधसंगि बिनसै सभ संगु ॥

चरन चलउ मारगि गोबिंद ॥

मिटहि पाप जपीऐ हरि बिंद ॥

कर हरि करम स्रवनि हरि कथा ॥

हरि दरगह नानक ऊजल मथा ॥२॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

बडभागी ते जन जग माहि ॥

सदा सदा हरि के गुन गाहि ॥

राम नाम जो करहि बीचार ॥

से धनवंत गनी संसार ॥

मनि तनि मुखि बोलहि हरि मुखी ॥

सदा सदा जानहु ते सुखी ॥

एको एकु एकु पछानै ॥

इत उत की ओहु सोझी जानै ॥

नाम संगि जिसि का मनु मानिआ ॥

नानक तिनहि निरंजनु जानिआ ॥३॥

गुर प्रसादि आपन आपु सुझै ॥

तिस की जानहु त्रिसना बुझै ॥

साधसंगि हरि हरि जसु कहत ॥

सरब रोग ते ओहु हरि जनु रहत ॥

अनदिनु कीरतनु केवल बख्यानु ॥

ग्रहिसत महि सोई निरबानु ॥

एक ऊपरि जिसु जन की आसा ॥
तिसि की कटीऐ जम की फासा ॥
पारब्रहम की जिसु मनि भूख ॥
नानक तिसहि न लागहि दूख ॥४॥

जिसु कउ हरि प्रभु मनि चिति आवै ॥
सो संतु सुहेला नही डुलावै ॥
जिसु प्रभु अपुना किरपा करै ॥
सो सेवकु कहु किस ते डरै ॥
जैसा सा तैसा द्रिसटाइआ ॥
अपुने कारज महि आपि समाइआ ॥
सोधत सोधत सोधत सीझिआ ॥
गुर प्रसादि ततु सभु बूझिआ ॥
जब देखउ तब सभु किछु मूलु ॥
नानक सो सूखमु सोई असथूलु ॥५॥

नह किछु जनमै नह किछु मरै ॥
आपन चलितु आप ही करै ॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

आवनु जावनु द्रसिटि अनद्रसिटि ॥
आगिआकारी धारी सभ स्रसिटि ॥
आपे आपि सगल महि आपि ॥
अनिक जुगति रचि थापि उथापि ॥
अबिनासी नाही किछु खंड ॥
धारण धारि रहिओ ब्रहमंड ॥
अलख अभेव पुरख परताप ॥
आपि जपाए त नानक जाप ॥६॥
जिनि प्रभु जाता सु सोभावंत ॥
सगल संसारु उधरै तिनि मंत ॥
प्रभ के सेवक सगल उधारन ॥
प्रभ के सेवक दूख बिसारन ॥
आपे मेलि लिए किरपाल ॥
गुर का सबदु जपि भए निहाल ॥
उन की सेवा सोई लागै ॥
जिस नो क्रिपा करहि बडभागै ॥

नामु जपत पावहि बिस्रामु ॥

नानक तिनि पुरख कउ ऊतम करि मानु ॥७॥

जो किछु करै सु प्रभ कै रंगि ॥

सदा सदा बसै हरि संगि ॥

सहज सुभाइ होवै सो होइ ॥

करणैहारु पछाणै सोइ ॥

प्रभ का कीआ जन मीठ लगाना ॥

जैसा सा तैसा द्रिसटाना ॥

जिस ते उपजे तिसु माहि समाए ॥

ओइ सुख निधान उनहू बनि आए ॥

आपस कउ आपि दीनो मानु ॥

नानक प्रभ जनु एको जानु ॥८॥१४॥

सलोकु ॥

सरब कला भरपूर प्रभ बिरथा जाननहार ॥

जा कै सिमरनि उधरीऐ नानक तिसु बलिहार ॥१॥

असटपदी ॥

टूटी गाढनहार गोपाल ॥

सरब जीआ आपे प्रतपिाल ॥

सगल की चिंता जसिु मन माहि ॥

तसि ते बरिथा कोई नाहि ॥

रे मन मेरे सदा हर जािप ॥

अबनिासी प्रभु आपे आपि ॥

आपन कीआ कछू न होइ ॥

जे सउ प्रानी लोचै कोइ ॥

तसिु बनिु नाही तेरै कछिु काम ॥

गत नािनक जप एिक हर नािम ॥१॥

रूपवंतु होइ नाही मोहै ॥

प्रभ की जोत सिगल घट सोहै ॥

धनवंता होइ कआिा को गरबै ॥

जा सभु कछिु तसि का दीआ दरबै ॥

अत सिूरा जे कोऊ कहावै ॥

प्रभ की कला बिना कह धावै ॥

जे को होइ बहै दातारु ॥

तसिु देनहारु जानै गावारु ॥

जसिु गुर प्रसादि तूटै हउ रोगु ॥

नानक सो जनु सदा अरोगु ॥२॥

जिउ मंदर कउ थामै थमनु ॥

तिउ गुर का सबदु मनहि असथमनु ॥

जिउ पाखाणु नाव चड़ि तरै ॥

प्राणी गुर चरण लगतु निसतरै ॥

जिउ अंधकार दीपक परगासु ॥

गुर दरसनु देखि मनि होइ बिगासु ॥

जिउ महा उदिआन महि मारगु पावै ॥

तिउ साधू संगि मिलि जोति प्रगटावै ॥

तिन संतन की बाछउ धूरि॥

नानक की हरि लोचा पूरि॥३॥

मन मूरख काहे बिललाईऐ ॥

पुरब लिखे का लिखिआ पाईऐ ॥

दूख सूख प्रभ देवनहारु ॥

अवर तिआगि तू तिसहि चितारु ॥

जो कछु करै सोई सुखु मानु ॥

भूला काहे फिरहि अजान ॥

कउन बसतु आई तेरै संग ॥

लपटि रहिओ रसि लोभी पतंग ॥

राम नाम जपि हिरदे माहि ॥

नानक पति सेती घरि जाहि ॥४॥

जिसु वखर कउ लैनि तू आइआ ॥

राम नामु संतन घरि पाइआ ॥

तजि अभिमानु लेहु मन मोलि ॥

राम नामु हिरदे महि तोलि ॥

लादि खेप संतह संगि चालु ॥

अवर तिआगि बिखिआ जंजाल ॥

धंनि धंनि कहै सभु कोइ ॥

मुख ऊजल हरि दरगह सोइ ॥

इहु वापारु विरला वापारै ॥

नानक ता कै सद बलिहारै ॥५॥

चरन साध के धोइ धोइ पीउ ॥

अरपि साध कउ अपना जीउ ॥

साध की धूरि करहु इसनानु ॥

साध ऊपरि जाईऐ कुरबानु ॥

साध सेवा वडभागी पाईऐ ॥

साधसंगि हरि कीरतनु गाईऐ ॥

अनिक बिघन ते साधू राखै ॥

हरि गुन गाइ अम्रित रसु चाखै ॥

ओट गही संतह दरि आइआ ॥

सरब सूख नानक तिह पाइआ ॥६॥

मिरतक कउ जीवालनहार ॥

भूखे कउ देवत अधार ॥

सरब नधिान जा की द्रसिटी माहि॥

पुरब लखिे का लहणा पाहि॥

सभु कछिु तसि का ओहु करनै जोगु ॥

तसिु बनिु दूसर होआ न होगु ॥

जपि जिन सदा सदा दनिु रैणी ॥

सभ ते ऊच नरिमल इह करणी ॥

करि किरिपा जसि कउ नामु दीआ ॥

नानक सो जनु नरिमलु थीआ ॥७॥

जा कै मनि गुिर की परतीति॥

तसिु जन आवै हरि प्रिभु चीति॥

भगतु भगतु सुनीऐ तहिु लोइ ॥

जा कै हरिदै एको होइ ॥

सचु करणी सचु ता की रहत ॥

सचु हरिदै सति मुखि कहित ॥

साची द्रसिटि साचा आकारु ॥

सचु वरतै साचा पासारु ॥

पारब्रहमु जिनि सिचु करि जाता ॥
नानक सो जनु सचि समाता ॥८॥१५॥

सलोकु ॥
रूपु न रेख न रंगु किछु त्रिहु गुण ते प्रभ भिंन ॥
तिसहि बुझाए नानका जिसु होवै सुप्रसंन ॥१॥

असटपदी ॥
अबिनासी प्रभु मन महि राखु ॥
मानुख की तू प्रीति तिआगु ॥
तिसु ते परै नाही किछु कोइ ॥
सरब निरंतरि एको सोइ ॥
आपे बीना आपे दाना ॥
गहिर ग्मभीरु गहीरु सुजाना ॥
पारब्रहम परमेसुर गोबिंद ॥
क्रिपा निधान दइआल बखसंद ॥
साध तेरे की चरनी पाउ ॥
नानक कै मनि इहु अनराउ ॥१॥

मनसा पूरन सरना जोग ॥
जो करि पाइआ सोई होगु ॥
हरन भरन जा का नेत्र फोरु ॥
तिस का मंत्रु न जानै होरु ॥
अनद रूप मंगल सद जा कै ॥
सरब थोक सुनीअहि घरि ता कै ॥
राज महि राजु जोग महि जोगी ॥
तप महि तपीसरु ग्रिहसत महि भोगी ॥
धिआइ धिआइ भगतह सुखु पाइआ ॥
नानक तिसु पुरख का किनै अंतु न पाइआ ॥२॥
जा की लीला की मिति नाहि ॥
सगल देव हारे अवगाहि ॥
पिता का जनमु कि जानै पूतु ॥
सगल परोई अपुनै सूति ॥
सुमति गिआनु धिआनु जिन देइ ॥
जन दास नामु धिआवहि सेइ ॥

तहि गुण महि जा कउ भरमाए ॥
जनमि मिरै फरि आिवै जाए ॥
ऊच नीच तसि के असथान ॥
जैसा जनावै तैसा नानक जान ॥३॥

नाना रूप नाना जा के रंग ॥
नाना भेख करहि इक रंग ॥
नाना बधि िकीनो बसिथारु ॥
प्रभु अबनिासी एकंकारु ॥
नाना चलति करे खनि माहि॥
पूरि रहिओ पूरनु सभ ठाइ ॥
नाना बधि किरि बिनत बनाई ॥
अपनी कीमति आपे पाई ॥
सभ घट तसि के सभ तसि के ठाउ ॥
जपि जिपि जीवै नानक हरि नाउ ॥४॥

नाम के धारे सगले जंत ॥
नाम के धारे खंड ब्रहमंड ॥

नाम के धारे सम्रिति बेद पुरान ॥

नाम के धारे सुनन गिआन धिआन ॥

नाम के धारे आगास पाताल ॥

नाम के धारे सगल आकार ॥

नाम के धारे पुरीआ सभ भवन ॥

नाम कै संगि उधरे सुनि स्रवन ॥

करि किरपा जिसु आपनै नामि लाए ॥

नानक चउथे पद महि सो जनु गति पाए ॥५॥

रूपु सति जा का सति असथानु ॥

पुरखु सति केवल परधानु ॥

करतूति सति सति जा की बाणी ॥

सति पुरखु सभ माहि समाणी ॥

सति करमु जा की रचना सति ॥

मूलु सति सति उतपति ॥

सति करणी निरमल निरमली ॥

जिसहि बुझाए तिसहि सभ भली ॥

सति नामु प्रभ का सुखदाई ॥

बिस्वासु सति नानक गुर ते पाई ॥६॥

सति बचन साधू उपदेस ॥

सति ते जन जा कै रिदै प्रवेस ॥

सति निरति बूझै जे कोइ ॥

नामु जपत ता की गति होइ ॥

आपि सति कीआ सभु सति ॥

आपे जानै अपनी मिति गति ॥

जिस की स्रिसटि सु करणैहारु ॥

अवर न बूझि करत बीचारु ॥

करते की मिति न जानै कीआ ॥

नानक जो तिसु भावै सो वरतीआ ॥७॥

बिसमन बिसम भए बिसमाद ॥

जिनि बूझिआ तिसु आइआ स्वाद ॥

प्रभ कै रंगि राचि जन रहे ॥

गुर कै बचनि पदारथ लहे ॥

ओइ दाते दुख काटनहार ॥

जा कै संगि तिरै संसार ॥

जन का सेवकु सो वडभागी ॥

जन कै संगि एक लिव लागी ॥

गुन गोबिद कीरतनु जनु गावै ॥

गुर प्रसादि नानक फलु पावै ॥८॥१६॥

सलोकु ॥

आदि सचु जुगादि सचु ॥

है भि सचु नानक होसी भि सचु ॥१॥

असटपदी ॥

चरन सति सति परसनहार ॥

पूजा सति सति सेवदार ॥

दरसनु सति सति पेखनहार ॥

नामु सति सति धिआवनहार ॥

आपि सति सति सभ धारी ॥

आपे गुण आपे गुणकारी ॥

सबदु सति सति प्रभु बकता ॥
सुरति सति सति जिसु सुनता ॥
बुझनहार कउ सति सभ होइ ॥
नानक सति सति प्रभु सोइ ॥१॥

सति सरूपु रिदै जिनि मानिआ ॥
करन करावन तिनि मूलु पछानिआ ॥
जा कै रिदै बिस्वासु प्रभ आइआ ॥
ततु गिआनु तिसु मनि प्रगटाइआ ॥
भै ते निरभउ होइ बसाना ॥
जिस ते उपजिआ तिसु माहि समाना ॥
बसतु माहि ले बसतु गडाई ॥
ता कउ भिंन न कहना जाई ॥
बूझै बूझनहारु बिबेक ॥
नाराइन मिले नानक एक ॥२॥

ठाकुर का सेवकु आगिआकारी ॥
ठाकुर का सेवकु सदा पूजारी ॥

ठाकुर के सेवक कै मनि परतीति ॥

ठाकुर के सेवक की निरमल रीति ॥

ठाकुर कउ सेवकु जानै संगि ॥

प्रभ का सेवकु नाम कै रंगि ॥

सेवक कउ प्रभ पालनहारा ॥

सेवक की राखै निरंकारा ॥

सो सेवकु जिसु दइआ प्रभु धारै ॥

नानक सो सेवकु सासि सासि समारै ॥३॥

अपुने जन का परदा ढाकै ॥

अपने सेवक की सरपर राखै ॥

अपने दास कउ देइ वडाई ॥

अपने सेवक कउ नामु जपाई ॥

अपने सेवक की आपि पति राखै ॥

ता की गति मिति कोइ न लाखै ॥

प्रभ के सेवक कउ को न पहूचै ॥

प्रभ के सेवक ऊच ते ऊचे ॥

जो प्रभि अपनी सेवा लाइआ ॥
नानक सो सेवकु दह दिसि प्रगटाइआ ॥४॥

नीकी कीरी महि कल राखै ॥
भसम करै लसकर कोटि लाखै ॥
जिस का सासु न काढत आपि ॥
ता कउ राखत दे करि हाथ ॥
मानस जतन करत बहु भाति ॥
तिस के करतब बिरथे जाति ॥
मारै न राखै अवरु न कोइ ॥
सरब जीआ का राखा सोइ ॥
काहे सोच करहि रे प्राणी ॥
जपि नानक प्रभ अलख विडाणी ॥५॥

बारं बार बार प्रभु जपीऐ ॥
पी अम्रितु इहु मनु तनु ध्रपीऐ ॥
नाम रतनु जिनि गुरमुखि पाइआ ॥
तिसु किछु अवरु नाही द्रिसटाइआ ॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

नामु धनु नामो रूपु रंगु ॥

नामो सुखु हरि नाम का संगु ॥

नाम रसि जो जन त्रिपताने ॥

मन तन नामहि नामि समाने ॥

ऊठत बैठत सोवत नाम ॥

कहु नानक जन कै सद काम ॥६॥

बोलहु जसु जिहबा दिनु राति ॥

प्रभि अपनै जन कीनी दाति ॥

करहि भगति आतम कै चाइ ॥

प्रभ अपने सिउ रहहि समाइ ॥

जो होआ होवत सो जानै ॥

प्रभ अपने का हुकमु पछानै ॥

तिस की महिमा कउन बखानउ ॥

तिस का गुनु कहि एक न जानउ ॥

आठ पहर प्रभ बसहि हजूरे ॥

कहु नानक सेई जन पूरे ॥७॥

मन मेरे तनि की ओट लेहि॥

मनु तनु अपना तनि जन देहि॥

जनि जिनि अपना प्रभू पछाता ॥

सो जनु सरब थोक का दाता ॥

तसि की सरनि सिरब सुख पावहि॥

तसि कै दरसि सिभ पाप मटिावहि॥

अवर सआिनप सगली छाडु ॥

तसिु जन की तू सेवा लागु ॥

आवनु जानु न होवी तेरा ॥

नानक तसिु जन के पूजहु सद पैरा ॥८॥१७॥

सलोकु ॥

सति पुरखु जनि जािनआि सतगिुरु तसि का नाउ ॥

तसि कै संगि सिखि उधरै नानक हरि गिुन गाउ ॥१॥

असटपदी ॥

सतगिुरु सखि की करै प्रतपिाल ॥

सेवक कउ गुरु सदा दइआल ॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

सखि की गुरु दुरमति मिलु हरै ॥

गुर बचनी हरि नामु उचरै ॥

सतिगुरु सखि के बंधन काटै ॥

गुर का सखिु बिकार ते हाटै ॥

सतिगुरु सखि कउ नाम धनु देइ ॥

गुर का सखिु वडभागी हे ॥

सतिगुरु सखि का हलतु पलतु सवारै ॥

नानक सतिगुरु सखि कउ जीअ नालि समारै ॥१॥

गुर कै ग्रिहि सेवकु जो रहै ॥

गुर की आगिआ मन महि सिहै ॥

आपस कउ करि किछु न जनावै ॥

हरि हिरि नामु रिदै सद धिआवै ॥

मनु बेचै सतिगुर कै पासि ॥

तसिु सेवक के कारज रासि ॥

सेवा करत होइ निहकामी ॥

तसि कउ होत परापति सुआमी ॥

अपनी क्रिपा जिसु आपि करेइ ॥
नानक सो सेवकु गुर की मति लेइ ॥२॥

बीस बिसवे गुर का मनु मानै ॥
सो सेवकु परमेसुर की गति जानै ॥
सो सतिगुरु जिसु रिदै हरि नाउ ॥
अनिक बार गुर कउ बलि जाउ ॥
सरब निधान जीअ का दाता ॥
आठ पहर पारब्रहम रंगि राता ॥
ब्रहम महि जनु जन महि पारब्रहमु ॥
एकहि आपि नही कछु भरमु ॥
सहस सिआनप लइआ न जाईऐ ॥
नानक ऐसा गुरु बडभागी पाईऐ ॥३॥

सफल दरसनु पेखत पुनीत ॥
परसत चरन गति निरमल रीति ॥
भेटत संगि राम गुन रवे ॥
पारब्रहम की दरगह गवे ॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

सुनि करि बचन करन आघाने ॥

मनि संतोखु आतम पतीआने ॥

पूरा गुरु अख्यओ जा का मंत्र ॥

अम्रित द्रिसटि पेखै होइ संत ॥

गुण बिअंत कीमति नही पाइ ॥

नानक जिसु भावै तिसु लए मिलाइ ॥४॥

जिहबा एक उसतति अनेक ॥

सति पुरख पूरन बिबेक ॥

काहू बोल न पहुचत प्रानी ॥

अगम अगोचर प्रभ निरबानी ॥

निराहार निरवैर सुखदाई ॥

ता की कीमति किनै न पाई ॥

अनिक भगत बंदन नित करहि ॥

चरन कमल हिरदै सिमरहि ॥

सद बलिहारी सतिगुर अपने ॥

नानक जिसु प्रसादि ऐसा प्रभु जपने ॥५॥

इहु हरि रसु पावै जनु कोइ ॥

अम्रितु पीवै अमरु सो होइ ॥

उसु पुरख का नाही कदे बिनास ॥

जा कै मनि प्रगटे गुनतास ॥

आठ पहर हरि का नामु लेइ ॥

सचु उपदेसु सेवक कउ देइ ॥

मोह माइआ कै संगि न लेपु ॥

मन महि राखै हरि हरि एकु ॥

अंधकार दीपक परगासे ॥

नानक भरम मोह दुख तह ते नासे ॥६॥

तपति माहि ठाढि वरताई ॥

अनदु भइआ दुख नाठे भाई ॥

जनम मरन के मिटे अंदेसे ॥

साधू के पूरन उपदेसे ॥

भउ चूका निरभउ होइ बसे ॥

सगल बिआधि मन ते खै नसे ॥

जसि का सा तनि किरिपा धारी ॥

साधसंगि जिप नािमु मुरारी ॥

थिति पाई चूके भ्रम गवन ॥

सुनि नानक हरि हिर जिसु स्रवन ॥७॥

निरगुनु आपि सिरगुनु भी ओही ॥

कला धारि जिनि सिगली मोही ॥

अपने चरित प्रभि आपि बिनाए ॥

अपुनी कीमति आपे पाए ॥

हरि बिनु दूजा नाही कोइ ॥

सरब निरंतरि एको सोइ ॥

ओति पोति रिवआ रूप रंग ॥

भए प्रगास साध कै संग ॥

रचि रिचना अपनी कल धारी ॥

अनिक बार नानक बलिहारी ॥८॥१८॥

सलोकु ॥

साथि न चालै बिनु भजन बिखिआ सगली छारु ॥

हरि हरि नामु कमावना नानक इहु धनु सारु ॥१॥

असटपदी ॥

संत जना मिलि करहु बीचारु ॥

एकु सिमरि नाम आधारु ॥

अवरि उपाव सभि मीत बिसारहु ॥

चरन कमल रिद महि उरि धारहु ॥

करन कारन सो प्रभु समरथु ॥

द्रिड़ु करि गहहु नामु हरि वथु ॥

इहु धनु संचहु होवहु भगवंत ॥

संत जना का निरमल मंत ॥

एक आस राखहु मन माहि ॥

सरब रोग नानक मिटि जाहि ॥१॥

जिसु धन कउ चारि कुंट उठि धावहि ॥

सो धनु हरि सेवा ते पावहि ॥

जसिु सुख कउ नति बाछहि मीत ॥

सो सुखु साधू संगि परीति ॥

जसिु सोभा कउ करहि भिली करनी ॥

सा सोभा भजु हरि की सरनी ॥

अनकि उपावी रोगु न जाइ ॥

रोगु मटिै हरि अवखधु लाइ ॥

सरब नधिान महि हिरि नामु नधिानु ॥

जपि नानक दरगहि परवानु ॥२॥

मनु परबोधहु हरि कै नाइ ॥

दह दसि धिावत आवै ठाइ ॥

ता कउ बघिनु न लागै कोइ ॥

जा कै रदिै बसै हरि सोइ ॥

कलि ताती ठांढा हरि नाउ ॥

समिरि समिरि सिदा सुख पाउ ॥

भउ बनिसै पूरन होइ आस ॥

भगति भाइ आतम परगास ॥

NITNEM
SAHIB
www.nitnempath.com

ततिु घरि जाइ बसै अबनिासी ॥
कहु नानक काटी जम फासी ॥३॥

ततु बीचारु कहै जनु साचा ॥
जनमि मिरै सो काचो काचा ॥
आवा गवनु मिटै प्रभ सेव ॥
आपु तिआगि सिरनि गुरदेव ॥
इउ रतन जनम का होइ उधारु ॥
हरि हिर सिमिर प्रिान आधारु ॥
अनकि उपाव न छूटनहारे ॥
सिम्रिति सासत बेद बीचारे ॥
हरि की भगति किरहु मनु लाइ ॥
मनि बिंछत नानक फल पाइ ॥४॥

संगि नि चालसि तेिरै धना ॥
तूं किआ लपटावहि मूरख मना ॥
सुत मीत कुट्मब अरु बनिता ॥
इन ते कहहु तुम कवन सनाथा ॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

राज रंग माइआ बसिथार ॥

इन ते कहहु कवन छुटकार ॥

असु हसती रथ असवारी ॥

झूठा ड्मफु झूठु पासारी ॥

जिनि दीए तिसु बुझै न बिगाना ॥

नामु बिसारि नानक पछुताना ॥५॥

गुर की मति तूं लेहि इआने ॥

भगति बिना बहु डूबे सिआने ॥

हरि की भगति करहु मन मीत ॥

निरमल होइ तुम्हारो चीत ॥

चरन कमल राखहु मन माहि ॥

जनम जनम के किलबिख जाहि ॥

आपि जपहु अवरा नामु जपावहु ॥

सुनत कहत रहत गति पावहु ॥

सार भूत सति हरि को नाउ ॥

सहजि सुभाइ नानक गुन गाउ ॥६॥

NITNEM
SAHIB
www.nitnempath.com

गुन गावत तेरी उतरसि मैलु ॥

बनिसि जाइ हउमै बिखु फैलु ॥

होहि अचिंतु बसै सुख नालि ॥

सासि ग्रासि हरि नामु समालि ॥

छाडि सिआनप सगली मना ॥

साधसंगि पावहि सचु धना ॥

हरि पूंजी संचि करहु बिउहारु ॥

ईहा सुखु दरगह जैकारु ॥

सरब निरंतरि एको देखु ॥

कहु नानक जा कै मसतकि लेखु ॥७॥

एको जपि एको सालाहि ॥

एकु सिमरि एको मन आहि ॥

एकस के गुन गाउ अनंत ॥

मनि तनि जापि एक भगवंत ॥

एको एकु एकु हरि आपि ॥

पूरन पूरि रहिओ प्रभु बिआपि ॥

अनकि बसिथार एक ते भए ॥
एकु अराधि पराछत गए ॥
मन तन अंतरि एकु प्रभु राता ॥
गुर प्रसादि नानक इकु जाता ॥८॥१९॥

सलोकु ॥
फरित फरित प्रभ आइआ परिआ तउ सरनाइ ॥
नानक की प्रभ बेनती अपनी भगती लाइ ॥१॥

असटपदी ॥
जाचक जनु जाचै प्रभ दानु ॥
करि किरिपा देवहु हरि नामु ॥
साध जना की मागउ धूरि ॥
पारब्रहम मेरी सरधा पूरि ॥
सदा सदा प्रभ के गुन गावउ ॥
सासि सासि प्रभ तुमहि धिआवउ ॥
चरन कमल सिउ लागै प्रीति ॥
भगति करउ प्रभ की नित नीति ॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

एक ओट एको आधारु ॥

नानकु मागै नामु प्रभ सारु ॥१॥

प्रभ की दरसिटि महा सुखु होइ ॥

हरि रसु पावै बिरला कोइ ॥

जिनि चाखिआ से जन त्रिपताने ॥

पूरन पुरख नही डोलाने ॥

सुभर भरे प्रेम रस रंगि ॥

उपजै चाउ साध कै संगि ॥

परे सरनि आन सभ तिआगि ॥

अंतरि प्रगास अनदिनु लिव लागि ॥

बडभागी जपिआ प्रभु सोइ ॥

नानक नामि रते सुखु होइ ॥२॥

सेवक की मनसा पूरी भई ॥

सतिगुर ते निरमल मति लई ॥

जन कउ प्रभु होइओ दइआलु ॥

सेवकु कीनो सदा निहालु ॥

बंधन काटि मुकति जिनु भइआ ॥

जनम मरन दूखु भ्रमु गइआ ॥

इछ पुनी सरधा सभ पूरी ॥

रवि रहिआ सद संगि हजूरी ॥

जिस का सा तिनि लीआ मिलाइ ॥

नानक भगती नामि समाइ ॥३॥

सो कितु बिसरै जि घाल न भानै ॥

सो कितु बिसरै जि कीआ जानै ॥

सो कितु बिसरै जिनि सभु किछु दीआ ॥

सो कितु बिसरै जि जीवन जीआ ॥

सो कितु बिसरै जि अगनि महि राखै ॥

गुर प्रसादि को बिरला लाखै ॥

सो कितु बिसरै जि बिखु ते काढै ॥

जनम जनम का टूटा गाढै ॥

गुरि पूरै ततु इहै बुझाइआ ॥

प्रभु अपना नानक जन धिआइआ ॥४॥

साजन संत करहु इहु कामु ॥

आन तिआगि जिपहु हिर नामु ॥

सिमिर सिमिर सिमिर सुख पावहु ॥

आपि जिपहु अवरह नामु जपावहु ॥

भगति भाइ तरीऐ संसारु ॥

बिनु भगती तनु होसी छारु ॥

सरब कलिआण सूख निधि नामु ॥

बूडत जात पाए बिस्रामु ॥

सगल दूख का होवत नासु ॥

नानक नामु जपहु गुनतासु ॥५॥

उपजी प्रीति प्रेम रसु चाउ ॥

मन तन अंतरि इही सुआउ ॥

नेत्रहु पेखि दरसु सुखु होइ ॥

मनु बिगसै साध चरन धोइ ॥

भगत जना कै मनि तिन रंगु ॥

बिरला कोऊ पावै संगु ॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

एक बसतु दीजै करि मिइआ ॥

गुर प्रसादि नामु जपि लिइआ ॥

ता की उपमा कही न जाइ ॥

नानक रहिआ सरब समाइ ॥६॥

प्रभ बखसंद दीन दइआल ॥

भगति विछल सदा करिपाल ॥

अनाथ नाथ गोबिंद गुपाल ॥

सरब घटा करत प्रतिपाल ॥

आदि पुरख कारण करतार ॥

भगत जना के प्रान अधार ॥

जो जो जपै सु होइ पुनीत ॥

भगति भाइ लावै मन हीत ॥

हम निरगुनीआर नीच अजान ॥

नानक तुमरी सरनि पुरख भगवान ॥७॥

सरब बैकुंठ मुकति मोख पाए ॥

एक निमिख हरि के गुन गाए ॥

www.nitnempath.com

अनकि राज भोग बडआई ॥

हरकि नाम की कथा मनभाई ॥

बहु भोजन कापर संगीत ॥

रसना जपती हरहिरनीत ॥

भली सु करनी सोभा धनवंत ॥

हरिदै बसे पूरन गुर मंत ॥

साधसंगपि्रभ देहु नविास ॥

सरब सूख नानक परगास ॥८॥२०॥

सलोकु ॥

सरगुन नरिगुन नरिंकार सुंन समाधी आप॥

आपन कीआ नानका आपे ही फरिजिाप॥१॥

असटपदी ॥

जब अकारु इहु कछु न द्रसिटेता ॥

पाप पुंन तब कह ते होता ॥

जब धारी आपन सुंन समाध॥

तब बैर बरिोध कसुि संगकिमात॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

जब इस का बरनु चहिनु न जापत ॥

तब हरख सोग कहु कसिहि बिआपत ॥

जब आपन आप आपि पारब्रहम ॥

तब मोह कहा कसु होवत भरम ॥

आपन खेलु आपि वरतीजा ॥

नानक करनैहारु न दूजा ॥१॥

जब होवत प्रभ केवल धनी ॥

तब बंध मुकति कहु कसि कउ गनी ॥

जब एकहि हरि अगम अपार ॥

तब नरक सुरग कहु कउन अउतार ॥

जब नरिगुन प्रभ सहज सुभाइ ॥

तब सिव सकति कहहु कितु ठाइ ॥

जब आपहि आपि अपनी जोति धरै ॥

तब कवन निडरु कवन कत डरै ॥

आपन चलित आपि करनैहार ॥

नानक ठाकुर अगम अपार ॥२॥

अबनिासी सुख आपन आसन ॥

तह जनम मरन कहु कहा बनिासन ॥

जब पूरन करता प्रभु सोइ ॥

तब जम की त्रास कहहु कसिु होइ ॥

जब अबगित अगोचर प्रभ एका ॥

तब चत्रि गुपत कसिु पूछत लेखा ॥

जब नाथ नरिंजन अगोचर अगाधे ॥

तब कउन छुटे कउन बंधन बाधे ॥

आपन आप आप ही अचरजा ॥

नानक आपन रूप आप ही उपरजा ॥३॥

जह नरिमल पुरखु पुरख पतहिोता ॥

तह बनिु मैलु कहहु कआि धोता ॥

जह नरिंजन नरिंकार नरिबान ॥

तह कउन कउ मान कउन अभमिान ॥

जह सरूप केवल जगदीस ॥

तह छल छद्रि लगत कहु कीस ॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

जह जोति सरूपी जोति संगि समावै ॥

तह कसिह भूख कवनु त्रपितावै ॥

करन करावन करनैहारु ॥

नानक करते का नाहि सुमारु ॥४॥

जब अपनी सोभा आपन संगि बनाई ॥

तब कवन माइ बाप मित्रि सुत भाई ॥

जह सरब कला आपहि परबीन ॥

तह बेद कतेब कहा कोऊ चीन ॥

जब आपन आपु आपि उरि धारै ॥

तउ सगन अपसगन कहा बीचारै ॥

जह आपन ऊच आपन आपि नेरा ॥

तह कउन ठाकुरु कउनु कहीऐ चेरा ॥

बिसमन बिसम रहे बिसमाद ॥

नानक अपनी गति जानहु आपि ॥५॥

जह अछल अछेद अभेद समाइआ ॥

ऊहा किसहि बिआपत माइआ ॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

आपस कउ आपहि आदेसु ॥

तहि गुण का नाही परवेसु ॥

जह एकहि एक एक भगवंता ॥

तह कउनु अचिंतु किसु लागै चिंता ॥

जह आपन आपु आपि पतीआरा ॥

तह कउनु कथै कउनु सुननैहारा ॥

बहु बेअंत ऊच ते ऊचा ॥

नानक आपस कउ आपहि पहूचा ॥६॥

जह आपि रचिओ परपंचु अकारु ॥

तिहु गुण महि कीनो बिसथारु ॥

पापु पुंनु तह भई कहावत ॥

कोऊ नरक कोऊ सुरग बंछावत ॥

आल जाल माइआ जंजाल ॥

हउमै मोह भरम भै भार ॥

दूख सूख मान अपमान ॥

अनिक प्रकार कीओ बख्यान ॥

आपन खेलु आपि करि देखै ॥
खेलु संकोचै तउ नानक एकै ॥७॥

जह अबिगतु भगतु तह आपि॥
जह पसरै पासारु संत परतापि॥
दुहू पाख का आपहि धनी ॥
उन की सोभा उनहू बनी ॥
आपहि कउतक करै अनद चोज ॥
आपहि रस भोगन निरजोग ॥
जिसु भावै तिसु आपन नाइ लावै ॥
जिसु भावै तिसु खेल खिलावै ॥
बेसुमार अथाह अगनत अतोलै ॥
जिउ बुलावहु तिउ नानक दास बोलै ॥८॥२१॥

सलोकु ॥
जीअ जंत के ठाकुरा आपे वरतणहार ॥
नानक एको पसरिआ दूजा कह द्रिसटार ॥१॥

असटपदी ॥

आपि कथै आपि सुननैहारु ॥

आपहि एकु आपि बिसथारु ॥

जा तिसु भावै ता स्रिसटि उपाए ॥

आपनै भाणै लए समाए ॥

तुम ते भिंनि नही किछु होइ ॥

आपन सूति सभु जगतु परोइ ॥

जा कउ प्रभ जीउ आपि बुझाए ॥

सचु नामु सोई जनु पाए ॥

सो समदरसी तत का बेता ॥

नानक सगल स्रिसटि का जेता ॥१॥

जीअ जंत्र सभ ता कै हाथ ॥

दीन दइआल अनाथ को नाथु ॥

जिसु राखै तिसु कोइ न मारै ॥

सो मूआ जिसु मनहु बिसारै ॥

तिसु तजि अवर कहा को जाइ ॥

सभ सरि एकु नरिंजन राइ ॥

जीअ की जुगति जा कै सभ हाथि ॥

अंतरि बाहरि जानहु साथि ॥

गुन नधिान बेअंत अपार ॥

नानक दास सदा बलहिार ॥२॥

पूरन पूरि रहे दइआल ॥

सभ ऊपरि होवत करिपाल ॥

अपने करतब जानै आपि ॥

अंतरजामी रहओि बआिपि ॥

प्रतपिालै जीअन बहु भाति ॥

जो जो रचओि सु तसिहि धिआति ॥

जसिु भावै तसिु लए मलिाइ ॥

भगति करहि हरि के गुण गाइ ॥

मन अंतरि बसि्वासु करि मानआि ॥

करनहारु नानक इकु जानआि ॥३॥

जनु लागा हरि एकै नाइ ॥

तिस की आस न बिरथी जाइ ॥

सेवक कउ सेवा बनि आई ॥

हुकमु बूझि परम पदु पाई ॥

इस ते ऊपरि नही बीचारु ॥

जा कै मनि बसिआ निरंकारु ॥

बंधन तोरि भए निरवैर ॥

अनदिनु पूजहि गुर के पैर ॥

इह लोक सुखीए परलोक सुहेले ॥

नानक हरि प्रभि आपहि मेले ॥४॥

साधसंगि मिलि करहु अनंद ॥

गुन गावहु प्रभ परमानंद ॥

राम नाम ततु करहु बीचारु ॥

द्रुलभ देह का करहु उधारु ॥

अम्रित बचन हरि के गुन गाउ ॥

प्रान तरन का इहै सुआउ ॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

आठ पहर प्रभ पेखहु नेरा ॥
मिटै अगिआनु बिनसै अंधेरा ॥
सुनि उपदेसु हिरदै बसावहु ॥
मन इछे नानक फल पावहु ॥५॥

हलतु पलतु दुइ लेहु सवारि ॥
राम नामु अंतरि उरि धारि ॥
पूरे गुर की पूरी दीखिआ ॥
जिसु मनि बसै तिसु साचु परीखिआ ॥
मनि तनि नामु जपहु लिव लाइ ॥
दूखु दरदु मन ते भउ जाइ ॥
सचु वापारु करहु वापारी ॥
दरगह निबहै खेप तुमारी ॥
एका टेक रखहु मन माहि ॥
नानक बहुरि न आवहि जाहि ॥६॥

तिस ते दूरि कहा को जाइ ॥
उबरै राखनहारु धिआइ ॥

नरिभउ जपै सगल भउ मिटै ॥
प्रभ करिपा ते प्राणी छुटै ॥
जिसु प्रभु राखै तिसु नाही दूख ॥
नामु जपत मनि होवत सूख ॥
चिंता जाइ मिटै अहंकारु ॥
तिसु जन कउ कोइ न पहुचनहारु ॥
सिरि ऊपरि ठाढा गुरु सूरा ॥
नानक ता के कारज पूरा ॥७॥

मति पूरी अम्रितु जा की द्रिसटि ॥
दरसनु पेखत उधरत स्रिसटि ॥
चरन कमल जा के अनूप ॥
सफल दरसनु सुंदर हरि रूप ॥
धंनु सेवा सेवकु परवानु ॥
अंतरजामी पुरखु प्रधानु ॥
जिसु मनि बिसै सु होत निहालु ॥
ता कै निकटि न आवत कालु ॥

अमर भए अमरा पदु पाइआ ॥

साधसंगि नानक हरि धिआइआ ॥८॥२२॥

सलोकु ॥

गिआन अंजनु गुरि दीआ अगिआन अंधेर बिनासु ॥

हरि किरपा ते संत भेटिआ नानक मनि परगासु ॥१॥

असटपदी ॥

संतसंगि अंतरि प्रभु डीठा ॥

नामु प्रभू का लागा मीठा ॥

सगल समिग्री एकसु घट माहि ॥

अनिक रंग नाना द्रिसटाहि ॥

नउ निधि अम्रितु प्रभ का नामु ॥

देही महि इस का बिस्रामु ॥

सुंन समाधि अनहत तह नाद ॥

कहनु न जाई अचरज बिसमाद ॥

तिनि देखिआ जिसु आपि दिखाए ॥

नानक तिसु जन सोझी पाए ॥१॥

सो अंतरि सो बाहरि अनंत ॥

घटि घटि बिआपि रहिआ भगवंत ॥

धरनि माहि आकास पइआल ॥

सरब लोक पूरन प्रतिपाल ॥

बनि तिनि परबति है पारब्रहमु ॥

जैसी आगिआ तैसा करमु ॥

पउण पाणी बैसंतर माहि ॥

चारि कुंट दह दिसे समाहि ॥

तिस ते भिंन नही को ठाउ ॥

गुर प्रसादि नानक सुखु पाउ ॥२॥

बेद पुरान सिम्रिति महि देखु ॥

ससीअर सूर नख्यत्र महि एकु ॥

बाणी प्रभ की सभु को बोलै ॥

आपि अडोलु न कबहू डोलै ॥

सरब कला करि खेलै खेल ॥

मोलि न पाईऐ गुणह अमोल ॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

सरब जोति महि जा की जोति ॥

धारि रहिओ सुआमी ओति पोति ॥

गुर परसादि भिरम का नासु ॥

नानक तिनि महि एहु बिसासु ॥३॥

संत जना का पेखनु सभु ब्रहम ॥

संत जना कै हिरदै सभि धरम ॥

संत जना सुनहि सुभ बचन ॥

सरब बिआपी राम संगि रचन ॥

जिनि जाता तिस की इह रहत ॥

सति बचन साधू सभि कहत ॥

जो जो होइ सोई सुखु मानै ॥

करन करावनहारु प्रभु जानै ॥

अंतरि बसे बाहरि भी ओही ॥

नानक दरसनु देखि सभ मोही ॥४॥

आपि सति कीआ सभु सति ॥

तिसु प्रभ ते सगली उतपति ॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

तसिु भावै ता करे बसिथारु ॥

तसिु भावै ता एकंकारु ॥

अनकि कला लखी नह जाइ ॥

जसिु भावै तसिु लए मलिाइ ॥

कवन नकिट किवन कहीऐ दूरि॥

आपे आपि आप भरपूरि॥

अंतरगति जिसिु आपि जिनाए ॥

नानक तसिु जन आपि बुझाए ॥५॥

सरब भूत आपि वरतारा ॥

सरब नैन आपि पेखनहारा ॥

सगल समग्री जा का तना ॥

आपन जसु आप ही सुना ॥

आवन जानु इकु खेलु बनाइआ ॥

आगिआकारी कीनी माइआ ॥

सभ कै मधि अलिपितो रहै ॥

जो किछु कहणा सु आपे कहै ॥

आगिआ आवै आगिआ जाइ ॥

नानक जा भावै ता लए समाइ ॥६॥

इस ते होइ सु नाही बुरा ॥

ओरै कहहु किनै कछु करा ॥

आपि भला करतूति अति नीकी ॥

आपे जानै अपने जी की ॥

आपि साचु धारी सभ साचु ॥

ओति पोति आपन संगि राचु ॥

ता की गति मिति कही न जाइ ॥

दूसर होइ त सोझी पाइ ॥

तिस का कीआ सभु परवानु ॥

गुर प्रसादि नानक इहु जानु ॥७॥

जो जानै तिसु सदा सुखु होइ ॥

आपि मिलाइ लए प्रभु सोइ ॥

ओहु धनवंतु कुलवंतु पतिवंतु ॥

जीवन मुकति जिसु रिदै भगवंतु ॥

धंनु धंनु धंनु जनु आइआ ॥

जसु प्रसादि सभु जगतु तराइआ ॥

जन आवन का इहै सुआउ ॥

जन कै संगि चिति आवै नाउ ॥

आपि मुकतु मुकतु करै संसारु ॥

नानक तिसु जन कउ सदा नमसकारु ॥८॥२३॥

सलोकु ॥

पूरा प्रभु आराधिआ पूरा जा का नाउ ॥

नानक पूरा पाइआ पूरे के गुन गाउ ॥१॥

असटपदी ॥

पूरे गुर का सुनि उपदेसु ॥

पारब्रहमु निकटि करि पेखु ॥

सासि सासि सिमरहु गोबिंद ॥

मन अंतर की उतरै चिंद ॥

आस अनित तिआगहु तरंग ॥

संत जना की धूरि मन मंग ॥

आपु छोडि बेनती करहु ॥

साधसंगि अगनि सागरु तरहु ॥

हरि धन के भरि लेहु भंडार ॥

नानक गुर पूरे नमसकार ॥१॥

खेम कुसल सहज आनंद ॥

साधसंगि भजु परमानंद ॥

नरक निवारि उधारहु जीउ ॥

गुन गोबिंद अम्रित रसु पीउ ॥

चिति चितवहु नाराइण एक ॥

एक रूप जा के रंग अनेक ॥

गोपाल दामोदर दीन दइआल ॥

दुख भंजन पूरन किरपाल ॥

सिमरि सिमरि नामु बारं बार ॥

नानक जीअ का इहै अधार ॥२॥

उतम सलोक साध के बचन ॥

अमुलीक लाल एहि रतन ॥

सुनत कमावत होत उधार ॥

आपि तरै लोकह निसतार ॥

सफल जीवनु सफलु ता का संगु ॥

जा कै मनि लागा हरि रंगु ॥

जै जै सबदु अनाहदु वाजै ॥

सुनि सुनि अनद करे प्रभु गाजै ॥

प्रगटे गुपाल महांत कै माथे ॥

नानक उधरे तिन कै साथे ॥३॥

सरनि जोगु सुनि सरनी आए ॥

करि किरपा प्रभ आप मिलाए ॥

मिटि गए बैर भए सभ रेन ॥

अम्रित नामु साधसंगि लैन ॥

सुप्रसंन भए गुरदेव ॥

पूरन होई सेवक की सेव ॥

आल जंजाल बिकार ते रहते ॥

राम नाम सुनि रसना कहते ॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

करि प्रसादु दइआ प्रभि धारी ॥

नानक नबिही खेप हमारी ॥४॥

प्रभ की उसतति करहु संत मीत ॥

सावधान एकागर चीत ॥

सुखमनी सहज गोबिंद गुन नाम ॥

जिसु मनि बिसै सु होत निधान ॥

सरब इछा ता की पूरन होइ ॥

प्रधान पुरखु प्रगटु सभ लोइ ॥

सभ ते ऊच पाए असथानु ॥

बहुरि न होवै आवन जानु ॥

हरि धनु खाटि चलै जनु सोइ ॥

नानक जिसहि परापति होइ ॥५॥

खेम सांति रिधि निव निधि ॥

बुधि गिआनु सरब तह सिधि ॥

बिदिआ तपु जोगु प्रभ धिआनु ॥

गिआनु स्रेसट ऊतम इसनानु ॥

चारि पदारथ कमल प्रगास ॥
सभ कै मधि सगल ते उदास ॥
सुंदरु चतुरु तत का बेता ॥
समदरसी एक द्रिसटेता ॥
इह फल तिसु जन कै मुखि भने ॥
गुर नानक नाम बचन मनि सुने ॥६॥

इहु निधानु जपै मनि कोइ ॥
सभ जुग महि ता की गति होइ ॥
गुण गोबिंद नाम धुनि बाणी ॥
सिम्रिति सासत्र बेद बखाणी ॥
सगल मतांत केवल हरि नाम ॥
गोबिंद भगत कै मनि बिस्राम ॥
कोटि अप्राध साधसंगि मिटै ॥
संत क्रिपा ते जम ते छुटै ॥
जा कै मसतकि करम प्रभि पाए ॥
साध सरणि नानक ते आए ॥७॥

जिसु मनि बसै सुनै लाइ प्रीति ॥

तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति ॥

जनम मरन ता का दूखु निवारै ॥

दुलभ देह ततकाल उधारै ॥

निरमल सोभा अम्रित ता की बानी ॥

एकु नामु मन माहि समानी ॥

दूख रोग बिनसे भै भरम ॥

साध नाम निरमल ता के करम ॥

सभ ते ऊच ता की सोभा बनी ॥

नानक इह गुणि नामु सुखमनी ॥८॥२४॥